कठवल्लीउपनिषद्

अनुवादक—

रायबहादुर बाबू जालिमसिंह

—:*:—

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित व प्रकाशित।

सन् १९२३ ई०

पाँचवीं बार

लखनऊ



रायवहादुर वावू जालिमसिंह

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां
मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् ।
यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा
यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥
यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रिया-
एयर्वाक्तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः ।
षट्चक्रादिविचारसारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः
तं वन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करों वन्दना ब्रह्मको, जो अनन्त निजरूप ।
जेहिजानेजगभ्रमसकल, मिटै अन्धतमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं, नहीं जाति अरु भेद ।
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं, रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद, ताका करूं विचार ।
भाषामें तिस अर्थको, लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो, सो मैं करूं बखान ।
परमानन्द सहाय ते, जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट, अकबरपुर है गांव ।
जन्मभूमि मम जान तू, जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है जिसमें बैठकर

असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागर के पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्काल में होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषाटीका रचीगई है । इस टीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्त की ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफ का लिखा हुआ ऊपर से नीचे तक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा और यदि वायें तरफ से दहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा जहांतक होसका है प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्ति के अनुसार लिखा गया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्या का भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पाया है और मन्त्र का पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंही से सिद्ध किया गया है अपनी कल्पना कुछ नहीं की गई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रक्खागया है और उस पदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैजाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादा-भिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धता हो उससे टीकाकर्ता को सूचना करैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

कठवल्ली उपनिषद् ।

मूलम् ।

उशन्ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

ओम्, उशन्, ह, वै, वाजश्रवसः, सर्ववेदसम्, ददौ, तस्य, ह, नचिकेताः, नाम, पुत्रः, आस ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हवै	निश्चय करके	ददौ	देता भया
उशन्	यज्ञ के फल की इच्छा करता हुआ	तस्य	तिसका
वाजश्रवसः	वाजश्रवा का पुत्र उद्दालक ऋषि	ह	ही
सर्ववेदसम्	सब धन को विश्वजित यज्ञ में	नचिकेताः	नचिकेता
		नाम	नाम
		पुत्रः	एक पुत्र
		आस	था

नोट—वाज नाम अन्न का है तिस अन्न के दान करने से हुआ है श्रव याने यश जिसका तिसका नाम है वाजश्रवा तिसका जो पुत्र है उसका नाम है वाजश्रवस उसी का नाम उद्दालक भी है वह उद्दालक यज्ञ के फल की इच्छा करताहुआ विश्वजित नामक यज्ञ में सर्वस्व दक्षिणा देता भया ॥ १ ॥

मूलम् ।

त ँ ह कुमार ँ सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाऽऽविवेश सोऽमन्यत ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

तम्, ह, कुमारम्, सन्तम्, दक्षिणासु, नीयमानासु, श्रद्धा, आविवेश, सः, अमन्यत ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तम्=तिस नचिकेता को	
कुमारं संतम्=कुमार अवस्था होत सन्ते	
ह=भी	
दक्षिणासु=दक्षिणा में गौओं को	
नीयमानासु=ले जाने पर	
श्रद्धा=श्रद्धा	
आविवेश=होती भई	
+ च=और	
सः=वह	
अमन्यत=विचार करता भया	

नोट—वह नचिकेता जिसकी आयु पांच वर्ष से अधिक न थी ऐसा सोचता भया कि वेदोक्त यज्ञ के विगुण व्यतिक्रम होने से अनिष्टफल की प्राप्ति होती है जब ऐसी बुद्धि उसकी हुई तब वह पिताके अनिष्ट फल की निवृत्ति के वास्ते विचार करता है ॥ २ ॥

जैसे कि दूसरे मन्त्र में लिखाहै—

मूलम् ।

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः ॥
अनन्दानाम ते लोकास्तान्स गच्छति ता ददत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

पीतोदकाः, जग्धतृणाः, दुग्धदोहाः, निरिन्द्रियाः, अनन्दाः, नाम, ते, लोकाः, तान्, सः, गच्छति, ताः, ददत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पीतोदकाः	पान करलिया है जल जिन्होंने याने आगे जल पान करने की शक्ति नहीं है जिनको
जग्धतृणाः	खालियाहै घास जिन्होंने याने अब घास खानेकी शक्ति नहीं है जिनको
दुग्धदोहाः	दोह लियागया है दुग्ध जिनका याने आगे को प्रसूतयोग्य नहीं हैं जो
निरिन्द्रियाः	निष्फल होगई हैं इन्द्रियां जिनकी याने मरने के समीप हैं जो
ताः	ऐसी गौवों को
यः	जो पुरुष
ददत्	देता है
ते	वे
+ ये	जो
अनन्दाः	आनन्दरहित
नाम	वाले
लोकाः	लोक हैं
तान्	तिनको
सः	वह
गच्छति	प्राप्त होता है

मूलम् ।

सहोवाच पितरं तत कस्मै मान्दास्यसीति द्वितीयं तृतीयन्त ᳪ होवाच मृत्यवे त्वा ददामीति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

सः, ह, उवाच, पितरम्, तत, कस्मै, माम्, दास्यसि, इति, द्वितीयम्, तृतीयम्, तम्, ह, उवाच, मृत्यवे, त्वा, ददामि, इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	वह नचिकेता
ह	निश्चय करके
पितरम्	पितासे
उवाच	कहताभया कि
तत	हे तात हे पिता
कस्मै	किसके प्रति
माम्	मुझको
दास्यसि	देगा तू
इति	इसप्रकार से
+ यदा	जब
द्वितीयम्	दूसरी
तृतीयम्	तीसरी बार

सः=वह नचिकेता
ह=हठकरके
उवाच=कहताभया
त्वा=तुझको
मृत्यवे=मृत्युके प्रति
ददामि=देऊंगा मैं
इति=ऐसा तब
उद्दालकः=उद्दालक
आह=कहताभया

मूलम् ।

बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः किंस्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

बहूनाम्, एमि, प्रथमः, बहूनाम्, एमि, मध्यमः, किंस्वित्, यमस्य, कर्तव्यम्, यत्, मया, अद्य, करिष्यति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

बहूनाम्=बहुतेरों में
प्रथमः=प्रथम
एमि=होता हूं मैं
+ च=और
बहूनाम्=बहुतेरों में
मध्यमः=मध्यम
एमि=होता हूं मैं
किंस्वित्=क्या
यमस्य=यमराज का
कर्तव्यम्=प्रयोजन है
+ यत्=जो
मया=मुझकरके
अद्य=अब
करिष्यति=सिद्ध होगा

नोट—ऐसा नचिकेता अपने पिता के कहने पर अपने मनमें विचार करता भया और जब उद्दालक को शाप के पीछे पश्चात्ताप होनेलगा तब नचिकेता अगले मन्त्र में समझाता है ॥

मूलम् ।

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथापरे सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिव जायते पुनः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

अनुपश्य, यथा, पूर्वे, प्रतिपश्य, तथा, अपरे, सस्यम्, इव, मर्त्यः, पच्यते, सस्यम्, इव, जायते, पुनः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ हे तात	हे पिता
यथा	जैसे
पूर्वे	पूर्व तुम्हारे पिता पितामह आदि वर्तते थे उनको
अनुपश्य	देखो
तथा	तैसेही
अपरे	अन्य जो शिवि दशरथादि हुये हैं उनको
प्रतिपश्य	अच्छी तरह से देखो अर्थात् जैसे वे लोक अपने वचनों को पालते थे वैसेही आप भी अपने वचन को पालन करो
सस्यम् इव	धान के वृक्ष के समान
मर्त्यः	मनुष्य भी
पच्यते	परिपक्क होकर नाश होता है
+ च	और
सस्यम् इव	धान के वृक्षवत्
पुनः	फिर
मनुष्यः	मनुष्य मर करके
जायते	उत्पन्न होता है

नोट—नचिकेता पितासे कहता है कि जैसे तुम्हारे पिता पितामहादि अपने वचनों की पालना करते आये हैं और दशरथादिकों ने जैसे किया है वैसे आपभी अपने वचनकी पालना करो अर्थात् हमको यमपुरी जानेकी आज्ञा देवो यह शरीर तो धान के वृक्षवत् उत्पत्ति नाश होताही रहता है मेरे में मोह को त्यागकर यमपुरी भेजनेवाले वचन को आज्ञा देकर सत्य करो ॥ ६ ॥ जब पिताने नचिकेताको यमराज के पास जाने की आज्ञादी तब वह शरीरसहित पितृभक्ति के प्रभावसे यमपुर में गया और जब यमपुरी के द्वार पर पहुँचा तब उसको मालूम हुआ कि यमराज किसी कार्य के प्रति देशान्तर को गये हैं तब

तिस पुरी के द्वारपर खड़ारहा जब यमराज की स्त्री को मालूम हुआ कि एक अतिथि ब्राह्मण हमारे द्वारपर निराहार खड़ा है तब उसने आकर बड़े सत्कार से भोजन करने के लिये कहा तब नचिकेताने कहा कि बिना यमराज के भेंट किये मैं अन्न जलका ग्रहण नहीं करूंगा जब तीन रात्रि दिन नचिकेता निराहार खड़ारहा और चौथे दिन यमराज आये तब उन की स्त्रीने नचिकेताके आनेका समाचार कहा और मन्त्र पढ़कर उनको समझाती है कि—

मूलम् ।

वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान् तस्यैताᳬ शान्तिं कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

वैश्वानरः, प्रविशति, अतिथिः, ब्राह्मणः, गृहान्, तस्य, एताम्, शान्तिम्, कुर्वन्ति, हर, वैवस्वत, उदकम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वैवस्वत	हे विवस्वत सूर्य के पुत्र हे भगवन्
+ यथा	जैसे
वैश्वानरः	वैश्वानर अग्नि
गृहान्	घरों में
प्रविशति	प्रवेश करता है
+ तथा एव	वैसाही
+ एषः	वह
अतिथिः	अतिथि
ब्राह्मणः	ब्राह्मण अग्निरूप
+ तव द्वारे	तुम्हारे द्वारपर
+ स्थितः	स्थित है
उदकम्	जलको
हर	ले जावो
+ च	और
तस्य	उसके
एताम्	इस
+ तैजसीम्	तेजको
शान्तिम्	शान्ति
+ कुरु	करो

नोट—जिसके द्वारपर अतिथि भूखा रहजावे उसका जो फल है उस को अगले मन्त्र में यमराज की स्त्री कहती है ॥

मूलम् ।

आशा प्रतीक्षे सङ्गतꣳसूनृताञ्चेष्टापूर्ते पुत्र पशूꣳश्च सर्वान् एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे ॥८॥

पदच्छेदः ।

आशा, प्रतीक्षे, सङ्गतम्, सूनृताम्, च, इष्टापूर्ते, पुत्र, पशून्, च, सर्वान्, एतत्, वृङ्क्ते, पुरुषस्य, अल्पमेधसः, यस्य, अनश्नन्, वसति, ब्राह्मणः, गृहे ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्य=जिस			मनन किये हुये सुख की इच्छा को
अल्पमेधसः=अल्पबुद्धिवाले		संगतम्=सत्सङ्ग के फलको	
पुरुषस्य=पुरुष के		सूनृतम्=प्रियवाणी बोलने के फलको	
गृहे=गृह विषे		इष्टापूर्ते=इष्टापूर्त कर्म को	
अनश्नन्=भूखा		+ च=और	
ब्राह्मणः=ब्राह्मण		सर्वान्=सब	
अतिथिः=अतिथि		पुत्रपशून्=पुत्र और पशुओं को	
वसति=वास करता है		वृङ्क्ते=नाश करता है	
एतत्=उसका भूखा रहना			
तस्य=उस गृहस्थ पुरुषके			
आशा प्रतीक्षे=स्वर्गादि सुख तथा			

नोट—जब यमराज महाराज ने अपनी स्त्री से ऐसा सुना तब शीघ्र द्वारपर जाकर नचिकेता से कहते भये ॥

मूलम् ।

तिस्रोरात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन् ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रतित्रीन् वरान् वृणीष्व ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

तिस्रः, रात्रीः, यत्, अवात्सीः, गृहे, मे, अनश्नन्, ब्रह्मन्, अतिथिः, नमस्यः, नमः, ते, अस्तु, ब्रह्मन्, स्वस्ति, मे, अस्तु, तस्मात्, प्रति, त्रीन्, वरान्, वृणीष्व ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ब्रह्मन्=हे ब्रह्मन्		ते=तेरे प्रति	
तिस्रः=तीन		अस्तु=होवे	
रात्रीः=रात तक		ब्रह्मन्=हे ब्रह्मन्	
मे=मेरे		+ यतः=जिससे	
गृहे=घर में		मे=मेरे लिये	
यत्=जो		स्वस्ति=कल्याण होवे	
अनश्नन्=भूखा		तस्मात्=तिस लिये	
अतिथिः=अतिथि होकर		प्रति=तीन रातों के बदले	
अवात्सीः=रहा तू		त्रीन्=तीन	
+ ततः=तिस कारण से		वरान्=वरको	
नमस्यः=पूजनीय है तू		वृणीष्व=मांगले तू	
नमः=नमस्कार			

नोट—नचिकेता से यमराज कहते हैं कि जो तू अतिथि होकर तीन रात्री मेरे द्वारपर भूखा खड़ा रहा है इसवास्ते तीन वर तू मांगले सो नचिकेता अब वरों को मांगता है ॥

मूलम् ।

शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माभि-मृत्यो त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत् प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

शान्तसङ्कल्पः, सुमनाः, यथा, स्यात्, वीतमन्युः, गौतमः, मा, अभि, मृत्यो, त्वत्प्रसृष्टम्, मा, अभिवदेत्, प्रतीतः, एतत्, त्रयाणाम्, प्रथमं, वरं, वृणे ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

शान्तसङ्कल्पः=शान्त हुआ है सङ्कल्प जिसका
सुमनाः=शुद्ध हुआ है चित्त जिसका
वीतमन्युः=दूर होगया है क्रोध जिसका
यथा=ऐसा
गौतमः=उद्दालक मेरा पिता
त्वत्प्रसृष्टं=तुझ करके छूटे हुये
माम् अभि=मुझसे

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

मृत्यो=हे भगवन्
प्रतीतः=प्रसन्न
स्यात्=हो
च मा=और मुझसे
अभिवदेत्=सम्भाषण करै
त्रयाणाम्=तीनों वरों में से
एतत्=इस
प्रथमम्=प्रथम
वरं=वरको
वृणे=मांगताहूं मैं

नोट—नचिकेता कहता है कि हे मृत्यु भगवान्! गौतम जो मेरा पिता है उसको जो यह चिन्ता होरही है कि मेरे पुत्र की यम के पास जानेपर क्या जाने कैसी दशा होरही है सो इस सङ्कल्प से वह रहित होकर प्रसन्नचित्त हो और मेरे पर जो उसका क्रोध हुआ था वह भी दूर होजावे और जब मैं तुम्हारे यहां से फिर पिता के पास वापस जाऊं तब वह पूर्ववत् मेरे को जाने कि यह मेरा पुत्र है यह पहला वर मैं मांगता हूं उसके जवाब में मृत्यु भगवान् कहते हैं कि—

मूलम् ।

यथा पुरस्ताद्भविता प्रतीत औद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः सुखꣳ रात्रीः शयिता वीतमन्युस्त्वा ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम् ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

यथा, पुरस्तात्, भविता, प्रतीतः, औद्दालकिः, आरुणिः, मत्प्रसृष्टः, सुखम्, रात्रीः, शयिता, वीतमन्युः, त्वा, ददृशिवान्, मृत्युमुखात्, प्रमुक्तम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा=जैसे		भविता=रहेगा	
पुरस्तात्=पहले		च=और	
+ आसीत्=था		त्वाम्=तुझको	
+ तथा=वैसाही		मृत्युमुखात्=मृत्युके मुखसे	
औद्दालकिः=उद्दालक		प्रमुक्तम्=छुटाहुआ	
आरुणिः=अरुणका पुत्र		ददृशिवान्=देखकर	
वीतमन्युः=क्रोधसेरहित होता हुआ		मत्प्रसृष्टः=मेरेप्रसाद से	
+ च=और		सुखम्=सुखपूर्वक	
प्रतीतः=प्रसन्न होता हुआ		रात्रीः=रातोंतक	
		शयिता=सोवैगा	

मूलम् ।

स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति न तत्र त्वं न जरया बिभेति उभे तीर्त्वा अशनापिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

स्वर्गे, लोके, न, भयम्, किञ्चन, अस्ति, न, तत्र, त्वम्, न, जरया, बिभेति, उभे, तीर्त्वा, अशनापिपासे, शोकातिगः, मोदते, स्वर्गलोके ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
स्वर्गलोके=स्वर्गलोक में		त्वम्=तुम मृत्यु भी	
किञ्चन=कुछभी		न=नहीं	
भयम्=भय		असि=हो	
न=नहीं		+ च=और	
अस्ति=है		+ तत्र=तहां	
+ च=और		जरया=जराअवस्थाकरके	
तत्र=तहां		+ कः=कोई पुरुष	

न बिभेति=भयको नहीं प्राप्त होता है
+ च=और
अशनापिपासे=क्षुधा और पिपासा
उभे=दोनोंको
तीर्त्वा=तरकरके
शोकातिगः=शोकसेरहित होताहुआ
स्वर्गलोके=स्वर्गलोकमें
मोदते=हर्षको प्राप्त होता है

मूलम् ।

स त्वमग्निꣳ स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि तꣳ श्रद्दधानाय मह्यम् स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

सः, त्वम्, अग्निम्, स्वर्ग्यम्, अध्येषि, मृत्यो, प्रब्रूहि, तम्, श्रद्दधानाय, मह्यम्, स्वर्गलोकाः, अमृतत्वम्, भजन्ते, एतत्, द्वितीयेन, वृणे, वरेण ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मृत्यो	हे मृत्यु भगवान् !
+ यदि	अगर
सः	वह
त्वम्	तुम
स्वर्ग्यम्	स्वर्ग साधक
अग्निम्	अग्नि को
अध्येषि	जानते हो
+ तु	तो
तम्	उसको
मह्यम्	मुझ
श्रद्दधानाय	श्रद्धावान् के लिये
प्रब्रूहि	कहो
यं ज्ञात्वा	जिसको जानकर
स्वर्गलोकाः	स्वर्गनिवासी
अमृतत्वम्	अमरभाव को
भजन्ते	प्राप्त होते हैं
एतत्	इसको
द्वितीयेन	दूसरे
वरेण	वर करके
वृणे	मांगता हूं मैं

मूलम् ।

प्रते ब्रवीमि तदु मे निबोध स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन्

अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठाम् विद्धि त्वमेतन्निहितं गुहायाम् ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

प्रते, ब्रवीमि, तत्, उ+मे, निबोध, स्वर्ग्यम्, अग्निम्, नचिकेतः, प्रजानन्, अनन्तलोकाप्तिम्, अथो, प्रतिष्ठाम्, विद्धि, त्वम्, एतम्, निहितम्, गुहायाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नचिकेतः	हे नचिकेता
अहम्	मैं
स्वर्ग्यम्	स्वर्गसाधक
अग्निम्	अग्नि को
प्रजानन्	जानता हुआ
ते	तेरे प्रति
ब्रवीमि	कहता हूं
तत्	उसको
मे	मुझसे
निबोध	जान तू
उ	और
अनन्तलोकाप्तिम्	स्वर्ग में पहुँचानेवाली
अथो	और
प्रतिष्ठाम्	सबका आश्रयभूत
च	और
गुहायाम्	हृदयरूपी गुहा में
निहितम्	स्थित
एतम्	इस अग्नि को
त्वम्	तू
विद्धि	जान

मूलम् ।

लोकादिमग्निन्तमुवाच तस्मै या इष्टका यावतीर्वा यथा वा स चापि तत्प्रत्यवदद्यथोक्तमथास्य मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

लोकादिम्, अग्निम्, तम्, उवाच, तस्मै, याः, इष्टकाः, यावतीः, वा, यथा, वा, सः, च, अपि, तत्, प्रत्यवदत्, यथोक्तं, अथ, अस्य, मृत्युः, पुनः, एव, आह, तुष्टः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
लोकादिम्=लोकों के आदि कारण	
अग्निम्=अग्नि को	
च=और	
याः=जो	
इष्टकाः=ईंट के कुंड	
यावतीः=जितनी होनी चाहिये	
उसको	
वा=और	
यथा=जिस प्रकार का होना चाहिये	
तम्=तिस सबको	

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मै=नचिकेता के प्रति	
यमः=यम भगवान्	
उवाच=कहते भये	
च=और	
सः=वह नचिकेता	
अपि=भी	
तत्=उसको	
प्रत्यवदत्=वैसा ही कहता भया	
यथोक्तम्=जैसा कि यम महाराज ने कहा था	

नोट—जैसा यमराज भगवान् ने अग्निका विधान वर्णन किया था वैसे ही नचिकेता समुझकर उनको सुनाता भया ॥

मूलम् ।

तमब्रवीत् प्रीयमाणो महात्मा वरन्तवेहाद्य ददामि भूयः तवैव नाम्ना भवितायमग्निः सृङ्कां चेमामनेकरूपां गृहाण ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ।

तम्, अब्रवीत्, प्रीयमाणः, महात्मा, वरम्, तव, इह, अद्य, ददामि, भूयः, तव, एव, नाम्ना, भविता, अयम्, अग्निः, सृङ्काम्, च, इमाम्, अनेकरूपाम्, गृहाण ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तम्=तिस नचिकेता से	
प्रीयमाणः=प्रसन्न हो कर	
महात्मा=यमराज	
अब्रवीत्=कहते भये कि	
+ इदम्=यह	

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वरम्=वर	
तव=तुझको	
ददामि=देता हूं कि	
इह=संसार में	
अद्य=अब	

अयम्=यह	भूयः=और
अग्निः=अग्नि	इमाम्=इस
तव एव=तेरे ही	अनेकरूपाम्=विचित्र रूपवाली
नाम्ना=नाम करके	सृङ्काम्=माला को
भविता=प्रसिद्ध होगी	गृहाण=ग्रहण कर तू

मूलम् ।

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्येमाꣳ शान्तिमत्यन्तमेति ॥ १७ ॥

पदच्छेदः ।

त्रिणाचिकेतः, त्रिभिः, एत्य, संधिम्, त्रिकर्मकृत्, तरति, जन्म-मृत्यू, ब्रह्मजज्ञम्, देवम्, ईड्यम्, विदित्वा, निचाय्य, इमां, शान्तिम्, अत्यन्तम्, एति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
त्रिभिः=	तीनों माता पिता और आचार्य द्वारा	तरति=	पार कर जाता है
त्रिणाचिकेतः=	तीनबार ग्रहण किया है अग्नि को जिसने ऐसा अग्नि का उपासक पुरुष	+च=	और
सन्धिम्=	अनुसन्धान यानी स्वर वर्ण और मात्रा को प्राप्त होकर	ब्रह्मजज्ञम्=	ब्रह्महिरण्यगर्भ से उत्पन्न भये सर्वज्ञ
त्रिकर्मकृत्=	तीनोंकर्मोंको अर्थात् यज्ञ अध्ययन और दानको करता हुआ	ईड्यम्=	स्तुतिकरने योग्य
जन्ममृत्यू=	जन्म मरण को यानी आवागमन को	देवम्=	वैश्वानर अग्नि आत्मदेव को
		विदित्वा=	जानकर
		+च=	और
		निचाय्य=	अनुभव करके
		इमाम्=	इस
		अत्यन्तम्=	अत्यन्त
		शान्तिम्=	शान्ति को
		एति=	प्राप्त होता है

मूलम् ।

त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य एवं विद्वांश्चिनुते नाचिकेतम् स मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ १८ ॥

पदच्छेदः ।

त्रिणाचिकेतः, त्रयम्, एतत्, विदित्वा, यः, एवम्, विद्वान्, चिनुते, नाचिकेतम, सः, मृत्युपाशान्, पुरतः, प्रणोद्य, शोकातिगः, मोदते, स्वर्गलोके ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो
विद्वान्	विद्वान्
त्रिणाचिकेतः	त्रिणाचिकेत संज्ञक अग्निका सेवनकरने वाला
एवम्	इस प्रकार
विदित्वा	जान करके
एतत्	इस
त्रयम्	तीन प्रकार की
नाचिकेतम्	नाचिकेत नामक अग्नि को
चिनुते	उपासना करता है
सः	वह
पुरतः	पहिलेही से
मृत्युपाशान्	मृत्युके पाशों को
प्रणोद्य	काटकर
शोकातिगः	शोकरहित होता हुआ
स्वर्गलोके	स्वर्ग लोक में
मोदते	प्रसन्न होता है

मूलम् ।

एष तेऽग्निर्नचिकेतः स्वर्ग्योऽयमवृणीथा द्वितीयेन वरेण एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनासस्तृतीयं वरन्नचिकेतो वृणीष्व ॥ १९ ॥

पदच्छेदः ।

एषः, ते, अग्निः, नचिकेतः, स्वर्ग्यः, अयम्, अवृणीथाः, द्वितीयेन, वरेण, एतम्, अग्निम्, तव, एव, प्रवक्ष्यन्ति, जनासः, तृतीयम्, वरम्, नचिकेतः, वृणीष्व ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः=यह		एतम्=इस	
अयम्=वह		अग्निम्=अग्नि को	
स्वर्ग्यः=स्वर्गसाधक		तव एव=तेरेही	
अग्निः=अग्नि है		नाम्ना=नाम से	
नचिकेतः=हे नचिकेता		जनासः=लोक	
+ यम्=जिसको		प्रवक्ष्यन्ति=कथन करेंगे	
अवृणीथाः=तू पूछता भया		नचिकेतः=हे नचिकेता	
द्वितीयेन=दूसरे		अद्य=अब	
वरेण=वरकरके		तृतीयम्=तीसरे	
ते=तेरे लिये		वरम्=वरको	
+ दत्तः=दिया मैंने		वृणीष्व=मांगलेतू	

मूलम् ।

येयम्प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाऽहं वराणामेष वरस्तृतीयः ॥ २० ॥

पदच्छेदः ।

या, इयम्, प्रेते, विचिकित्सा, मनुष्ये, अस्ति, इति, एके, न, अयम, अस्ति, इति, च, एके, एतत्, विद्याम्, अनुशिष्टः, त्वया, अहम् वराणाम्, एषः, वरः, तृतीयः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ नाचिकेत उवाच=नचिकेता पूछता भया कि		मनुष्ये=पुरुष में	
एके=कोई एक		+ आत्मा=आत्मा	
+ आचार्याः=आचार्य		अस्ति=है	
इति=ऐसा		च=और	
+ वदन्ति=कहते हैं कि		एके=कोई आचार्य	
प्रेते=मरेहुए		इति=ऐसा	
		+ वदन्ति=कहते हैं कि	

नाऽस्ति=नहीं है
इयम्=यह
या=जो
विचिकित्सा=संशय है
तस्याः=तिसकी
+ निवृत्तिः=निवृत्ति
या=जो है
एतत्=उसको
अहम्=मैं
त्वया=आप करके
अनुशिष्टः=शिक्षित हुआ
विद्याम्=जानूं
एषः=यह
तृतीयः=तीसरा
वरः=वर
वराणाम्=वरों में से
याचे=मांगता हूं मैं

मूलम् ।

देवैरत्रापि विचिकित्सितं पुरा न हि सुविज्ञेयमणुरेष धर्मः अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व मा मोपरोत्सीरति मा सृजैनम् ॥ २१ ॥

पदच्छेदः ।

देवैः, अत्र, अपि, विचिकित्सितम्, पुरा, न, हि, सुविज्ञेयम्, अणुः, एषः, धर्मः, अन्यम्, वरम्, नचिकेतः, वृणीष्व, मा, मा, उपरोत्सीः, अति, मा, सृज, एनम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अत्र	इस ब्रह्मविद्या विषे
देवैः	देवतों करके
अपि	भी
पुरा	पहले से
विचिकित्सितम्	संशय किया गया है
हि	क्योंकि
एषः	यह
अणुः	सूक्ष्म
धर्मः	धर्म
नसुविज्ञेयम्	अच्छे प्रकार जानने को अशक्य है
नचिकेतः	हे नचिकेता
अन्यम्	और
वरम्	वरको
वृणीष्व	मांगले तू
माम्	मुझको
मा उपरोत्सीः	मत रोक
मा	मेरे लिये
एनम्	इस वरको
अतिसृज	छोड़दे तू

मूलम् ।

देवैरत्रापि विचिकित्सितं किल त्वं च मृत्यो यन्न सुविज्ञेयमात्थ वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित् ॥ २२ ॥

पदच्छेदः ।

देवैः, अत्र, अपि, विचिकित्सितम्, किल, त्वम्, च, मृत्यो, यत्, न, सुविज्ञेयम्, आत्थ, वक्ता, च, अस्य, त्वादृक्, अन्यः, न, लभ्यः, न, अन्यः, वरः, तुल्यः, एतस्य, कश्चित् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अत्र	इस विषय में	+ परन्तु	परंतु
देवैः	देवतों करके	अस्य	इसका
अपि	भी	वक्ता	कहनेवाला
विचिकित्सितम्	संशय किया गया है	त्वादृक्	आपके तुल्य
च	और	अन्यः	और कोई
मृत्यो	हे मृत्युभगवान् !	न लभ्यः	मिलने योग्य नहीं है
यत्	जो	च	और
त्वम्	आप	अन्यः	दूसरा
एनम्	इसको	कश्चित्	कोई
नसुविज्ञेयम्	दुर्विज्ञेय	वरः	वर
आत्थ	कहते हो	एतस्य	इसके
किल	सो ठीक है	न तुल्यः	तुल्य भी नहीं है

मूलम् ।

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान् भूमेर्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि ॥२३॥

पदच्छेदः ।

शतायुषः, पुत्रपौत्रान्, वृणीष्व, बहून्, पशून्, हस्तिहिरण्यम्,

अश्वान्, भूमेः, महत्, आयतनम्, वृणीष्व, स्वयम्, च, जीव, शरदः, यावत्, इच्छसि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
शतायुषः	सौवर्षकी आयुवाले	आयतनम्	स्थान को
पुत्रपौत्रान्	पुत्रपौत्रों को	वृणीष्व	मांग ले
वृणीष्व	मांगले तू	च	और
बहून्	बहुत से	स्वयम्	तूभी
पशून्	पशुओं को	यावत्	जबतक
हस्तिहिरण्यम्	हस्ती और द्रव्योंको	इच्छसि	इच्छाकरै
अश्वान्	घोड़ों को	तावत्	उतने
भूमेः	पृथिवी के	शरदः	वर्षोंतक
महत्	बड़े	जीव	जीतारहै

मूलम् ।

एतत्तुल्यं यदि मन्यसे वरं वृणीष्व वित्तं चिरजीविकाञ्च महाभूमौ नचिकेतस्त्वमेधि कामानां त्वा कामभाजं करोमि ॥ २४ ॥

पदच्छेदः ।

एतत्तुल्यम्, यदि, मन्यसे, वरम्, वृणीष्व, वित्तम्, चिरजीविकाम्, च, महाभूमौ, नचिकेतः, त्वम्, एधि, कामानाम्, त्वा, कामभाजम्, करोमि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदि	अगर	वृणीष्व	मांगले
एतत्तुल्यम्	इस वर के तुल्य	महाभूमौ	महान्भूमि में
नचिकेतः	हे नचिकेता	त्वम्	तू
वित्तम्	धनको	एधि	वृद्धि को प्राप्तहो
च	और	कामानाम्	सब भोगों का
चिरजीविकाम्	बड़ी आयु को	त्वा	तुझको
वरम्	श्रेष्ठ	कामभाजम्	भोग्य के योग्य
मन्यसे	समझता है तू	करोमि	करताहूं मैं
तु	तो		

मूलम् ।

ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान् कामाँश्छन्दतः प्रार्थयस्व इमा रामाः सरथाः सतूर्या न हीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः ॥ २५ ॥

पदच्छेदः ।

ये, ये, कामाः, दुर्लभाः, मर्त्यलोके, सर्वान्, कामान्, छन्दतः, प्रार्थयस्व, इमाः, रामाः, सरथाः, सतूर्याः, न + हि, ईदृशाः, लम्भनीयाः, मनुष्यैः, आभिः, मत्प्रताभिः, परिचारयस्व, नचिकेतः, मरणम्, मा, अनुप्राक्षीः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ये ये=जो जो	
कामाः=विषय भोग्य	
मर्त्यलोके=मनुष्यलोक में	
दुर्लभाः=दुर्लभ हैं	
+ तान्=उन	
सर्वान्=सब	
कामान्=भोगों को	
छन्दतः=इच्छानुसार	
प्रार्थयस्व=मांगले तू	
+ यथा=जैसी	
इमाः=ये	
रामाः=अप्सरायें	
सरथाः=सहित रथों के	
च=और	
सतूर्याः=सहित बाजों के हैं	
ईदृशाः=वैसी स्त्रियां	
इह=इस मनुष्यलोक में	
मनुष्यैः=मनुष्यों करके	
न लम्भनीयाः=नहीं प्राप्त होने योग्य हैं	
आभिः=इन	
मत्प्रताभिः=मेरी दीहुई अप्सरों से	
परिचारयस्व=अपनी सेवा करवा	
नचिकेतः=हे नचिकेता ।	
+ परन्तु=परंतु	
मरणम्=मरणसम्बन्धी	
प्रश्नम्=प्रश्नको	
मानुप्राक्षीः=मत पूछ	

मूलम् ।

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत् सर्वेन्द्रियाणाञ्जरयन्ति तेजः अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते ॥ २६ ॥

पदच्छेदः ।

श्वोभावाः, मर्त्यस्य, यत्, अन्तक, एतत्, सर्वेन्द्रियाणाम्, जरयन्ति, तेजः, अपि, सर्वम्, जीवितम्, अल्पम्, एव, तव, एव, वाहाः, तव, नृत्यगीते ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

अन्तक=हे यमराज हे नाशकर्ता ।
यत्=चूंकि
श्वोभावाः=ये संशययुक्त भाववाले पदार्थ
मर्त्यस्य=मनुष्य के
सर्वेन्द्रियाणाम्=सब इन्द्रियों के
तेजः=तेज को
जरयन्ति=क्षीण करते हैं
अपि=और
एव=निश्चय करके

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

एतत्=यह
सर्वम्=सम्पूर्ण
जीवितम्=आयु
अल्पम्=अल्पही है
+ तस्मात्=इसलिये
तव=आपके
वाहाः=रथादिक सवारियां
+ च=और
नृत्यगीते=नाचना गाना
तव एव=आपही के पास रहें

मूलम् ।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव ॥ २७ ॥

पदच्छेदः ।

न, वित्तेन, तर्पणीयः, मनुष्यः, लप्स्यामहे, वित्तम्, अद्राक्ष्म, चेत्, त्वा, जीविष्यामः, यावत्, ईशिष्यसि, त्वम्, वरः, तु, मे, वरणीयः, सः, एव ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मनुष्यः	मनुष्य
वित्तेन	धन करके
न तर्पणीयः	तृप्त होने योग्य नहीं है
वित्तम्	धन को
लप्स्यामहे	पावेंगे हम
चेत्	जब कि
अद्राक्ष्म	देखा है हमने
त्वा= त्वां	आपको
च	और
जीविष्यामः	जीते रहेंगे हम
यावत्	जबतक
ईशिष्यसि	राज करोगे तुम
तु	परंतु
मे	मेरे
वरणीयः	मांगने योग्य
वरः	वर
सः एव	वही है मृतक संबंधी है

मूलम् ।

अजीर्यताममृतानामुपेत्य जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन् अभि-ध्यायन् वर्णरतिप्रमोदानति दीर्घे जीविते को रमेत ॥ २८ ॥

पदच्छेदः ।

अजीर्यताम्, अमृतानाम्, उपेत्य, जीर्यन्, मर्त्यः, क्वधःस्थः, प्रजानन्, अभिध्यायन, वर्णरतिप्रमोदान्, अति, दीर्घे, जीविते, कः, रमेत ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अजीर्य्यताम्	जरारहित
अमृतानाम्	देवतन के
उपेत्य	प्राप्त होकर
जीर्य्यन्	जरामरणवान्
क्वधःस्थः	पृथिवी में रहने वाला
कः	कौन
प्रजानन्	विवेकी
मर्त्यः	पुरुष
वर्णरतिप्रमोदान्	रूपप्रतिविषयानन्द को यानी अप्सरादि विषयों को
अभिध्यायन्	विचार करताहुआ
अतिदीर्घे	अतिशय
जीविते	जीवनविषे
रमेत	रमण करैगा

मूलम् ।

यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत्
योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टो नान्यन्तस्मान्नचिकेता वृणीते ॥ २९ ॥

पदच्छेदः ।

यस्मिन्, इदम्, विचिकित्सन्ति, मृत्यो, यत्साम्पराये, महति, ब्रूहि, नः, तत्, यः, अयम्, वरः, गूढम्, अनुप्रविष्टः, न, अन्यम्, तस्मात्, नचिकेताः, वृणीते ॥

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यस्मिन्=जिस मृतक विषे
+ च=और
यस्मिन् महति=जिस बड़ी
साम्पराये=परलोक की गति विषे
यत्=जो
इदम्=यह
विचिकित्सन्ति=संशय करते हैं
तत्=तिसको
नः=मेरे लिये
ब्रूहि=कह तू
यः=जो

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

अयम्=यह
गूढम्=कठिन
+ च=और
अनुप्रविष्टः=गुप्त
वरः=वर
तस्मात्=तिससे भिन्न
अन्यम्=और
+ वरम्=वर को
नचिकेताः=नचिकेता
न=नहीं
वृणीते=मांगता है

इति प्रथमाध्याये प्रथमावल्ली संपूर्णा ॥

मूलम् ।

ॐ अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषꣳ सिनीतः तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते ॥१॥

पदच्छेदः ।

अन्यत्, श्रेयः, अन्यत्, उत, एव, प्रेयः, ते, उभे, नानार्थे, पुरुषम्, सिनीतः, तयोः, श्रेयः, आददानस्य, साधु, भवति, हीयते, अर्थात्, यः, उ, प्रेयः, वृणीते ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यमराज उवाच=यमराज बोलते भये कि	तयोः=उन दोनों में से
श्रेयः=श्रेय याने विद्या	श्रेयः=विद्या
अन्यत्=और ही है	आददानस्य=ग्रहण करनेवाले का
उत=और	साधु=कल्याण
प्रेयः=प्रेय याने अविद्या	भवति=होता है
अन्यत् एव=औरही है	उ=और
ते=वे	यः=जो
उभे=दोनों	प्रेयः=अविद्या को
नानार्थे=भिन्न भिन्न प्रयोजन के वास्ते	वृणीते=ग्रहण करता है
	+ सः=वह
पुरुषम्=पुरुषको	अर्थात्=पुरुषार्थ से
सिनीतः=बांधते हैं	हीयते=हीन होता है

मूलम् ।

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

श्रेयः, च, प्रेयः, च, मनुष्यम्, एतः, तौ, सम्परीत्य, विविनक्ति, धीरः, श्रेयः, हि, धीरः, अभिप्रेयसः, वृणीते, प्रेयः, मन्दः, योगक्षेमात्, वृणीते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
श्रेयः=श्रेय	
च=और	
प्रेयः=प्रेय	
मनुष्यम्=मनुष्य को	
एतः=प्राप्त होते हैं	
तौ=उन दोनों को	
सम्परीत्य=देखकरके	
धीरः=बुद्धिमान् पुरुष	
विविनक्ति=पृथक् पृथक् करता है	
धीरः=धीर पुरुष	

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
श्रेयः=श्रेयको	
हि=ही	
अभिप्रेयसः=प्रेय से भिन्न	
वृणीते=ग्रहण करता है	
च=और	
मन्दः=मन्दबुद्धिवाला पुरुष	
प्रेयः=प्रेयको ही	
योगक्षेमात्=योगक्षेमकरके	
वृणीते=ग्रहण करता है	

मूलम् ।

स त्वं प्रियान् प्रियरूपांश्च कामानभिध्यायन्नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः
नैतांᳲ सृङ्कां वित्तमयीमवाप्तो यस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

सः, त्वम्, प्रियान्, प्रियरूपान्, च, कामान्, अभिध्यायन्, नचिकेतः, अत्यस्राक्षीः, न, एताम्, सृङ्काम्, वित्तमयीम्, अवाप्तः, यस्याम्, मज्जन्ति, बहवः, मनुष्याः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः=सो	
त्वम्=तू	
नचिकेतः=हे नचिकेता	
प्रियान्=प्रिय पुत्र कलत्र धनादिकों को	
च=और	
प्रियरूपान्=प्रियरूप	

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
कामान्=भोगों को	
अभिध्यायन्=विचारता हुआ	
अत्यस्राक्षीः=त्यागताभया	
एताम्=इस	
सृङ्काम्=बाहुल्यता	
वित्तमयीम्=धनयुक्त कर्मगति को	

यस्याम्=जिसमें	मज्जन्ति=डूबते हैं
बहवः=बहुत से	न=नहीं
मनुष्याः=मनुष्य	अवाप्तः=प्राप्त होता भया तू

मूलम् ।

दूरमेते विपरीते विषूची अविद्या या च विद्येति ज्ञाता विद्याभीप्सिनन्नचिकेतसं मन्ये न त्वा कामा बहवो लोलुपन्तः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

दूरम्, एते, विपरीते, विषूची, अविद्या, या, च, विद्या, इति, ज्ञाता, विद्याभीप्सिनम्, नचिकेतसम्, मन्ये, न, त्वा, कामाः, बहवः, लोलुपन्तः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एते	ये दोनों	विषूची	भिन्न भिन्न फल वाली हैं
या	जो	त्वा	तुझ
विद्या	विद्या	नचिकेतसम्	नचिकेता को
च	और	विद्याभीप्सिनम्	विद्या का चाहने वाला
अविद्या	अविद्या	मन्ये	मानता हूं मैं
इति	करके	+ हि	क्योंकि
ज्ञाता	प्रसिद्ध हैं	+ त्वाम्	तुझको
ते	वे	बहवः	बहुत
दूरम्	अत्यन्त	कामाः	भोग भी
विपरीते	एक दूसरे से विरुद्ध धर्मवाली	न लोलुपन्तः	नहीं लुभाते भये
च	और		

मूलम् ।

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः दंद्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अंधेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

अविद्यायाम्, अन्तरे, वर्त्तमानाः, स्वयम्, धीराः, पण्डितम्मन्य-

मानाः, दन्द्रम्यमाणाः, परियन्ति, मूढाः, अन्धेन, एव, नीयमानाः, यथा, अन्धाः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अविद्यायाम्	अविद्या के
अन्तरे	मध्य विषे
वर्त्तमानाः	वर्त्तते हुये
मूढाः	मूढ़जन
स्वयम्	अपने को
धीराः	धीर
पण्डितम्	पण्डित
मन्यमानाः	माननेवाले
दंद्रम्यमाणाः	अनेक कुटिल भेष को धारण करते हुये
परियन्ति	भ्रमते रहते हैं
यथा	जैसे
अन्धः	अंधा पुरुष
अन्धेन एव	अन्धे करके ही
नीयमानाः	लेगया हुआ भ्रमता है तैसे

मूलम् ।

न साम्परायः प्रतिभाति बालम्प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम् अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

न, साम्परायः, प्रतिभाति, बालम्, प्रमाद्यन्तम्, वित्तमोहेन, मूढम्, अयम्, लोकः, न, अस्ति, परः, इति, मानी, पुनः, पुनः, वशम्, आपद्यते, मे ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
साम्परायः	शास्त्रोक्तकर्म
वित्तमोहेन	धन पुत्रादि मोह करके
मूढम्	मूढ
बालम्	अविवेकी
प्रमाद्यन्तम्	प्रमादी को
न प्रतिभाति	नहीं प्रकाशता है
अयम्	यही
लोकः	लोक है
परः	परलोक
न अस्ति	नहीं है
इति	ऐसा
मानी	माननेवाला पुरुष
पुनःपुनः	बारंबार
मे	मुझ यमराज के
वशम्	वशको
आपद्यते	प्राप्त होता है

मूलम् ।

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वन्तोपि बहवो यन्न विद्युः आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः ७॥

पदच्छेदः ।

श्रवणाय, अपि, बहुभिः, यः, न, लभ्यः, शृण्वन्तः, अपि, बहवः, यम्, न, विद्युः, आश्चर्यः, वक्ता, कुशलः, अस्य, लब्धा, आश्चर्यः, ज्ञाता, कुशलानुशिष्टः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः=जो	
बहुभिः=बहुतों करके	
श्रवणाय=सुनने के लिये	
अपि=भी	
न लभ्यः=नहीं प्राप्त होने योग्य है	
+ च=और	
यम्=जिसको	
शृण्वन्तः=सुनते हुए	
अपि=भी	
बहवः=बहुतेरे	
न विद्युः=नहीं जानते हैं	
इति=ऐसे	
वक्ता=आत्मा का कहनेवाला	
आश्चर्यः=आश्चर्यरूप है	
च=और	
अस्य=इसका	
लब्धा=पानेवाला	
कुशलः=निपुण है	
च=और	
अस्य=इसका	
ज्ञाता=जाननेवाला	
कुशलानुशिष्टः=	श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ आचार्य से शिक्षित हुआ भी
आश्चर्यः=आश्चर्यरूप है	

मूलम् ।

न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः अनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्त्यणीयान् ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

न, नरेण, अवरेण, प्रोक्तः, एषः, सुविज्ञेयः, बहुधा, चिन्त्यमानः, अनन्यप्रोक्ते, गतिः, अत्र, न, अस्ति, अणीयान्, हि, अतर्क्यम्, अणुप्रमाणात् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अवरेण=	अश्रेष्ठ तर्की
नरेण=	पुरुष करके
बहुधा=	बहुत प्रकार से
प्रोक्तः=	कहा हुआ और
चिन्त्यमानः=	विचारा हुआ
एषः=	यह आत्मा
न सुविज्ञेयः=	नहीं सम्यक् प्रकार जानने योग्य है
च=	और
अनन्यप्रोक्ते=	अद्वैतवादि आचार्य करके कहे हुये
अत्र=	इस आत्मा विषे
गतिः=	कोई चिंता या शंका
न अस्ति=	नहीं है
हि=	क्योंकि
एषः आत्मा=	यह आत्मा
अतर्क्यम्=	तर्करहित
अणुप्रमाणात्=	सूक्ष्म परमाणु से भी
अणीयान्=	सूक्ष्म है

मूलम् ।

नैषा तर्केण मतिरापनेया प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय प्रेष्ठ यान्त्वमापः सत्यधृतिर्बतासित्वादृङ्नो भूयान्नचिकेतः प्रष्टा ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

न, एषा, तर्केण, मतिः, आपनेया, प्रोक्ता, अन्येन, एव, सुज्ञानाय, प्रेष्ठ, याम्, त्वम्, आपः, सत्यधृतिः, बत, असि, त्वादृक्, नः, भूयात्, नचिकेतः, प्रष्टा ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषा=	यह
मतिः=	ब्रह्मविषयणीबुद्धि
तर्केण=	तर्ककरके
न=	नहीं
आपनेया=	प्राप्त होने योग्य है
प्रेष्ठ=	हे प्रियदर्शन
त्वम्=	तू
सत्यधृतिः=	सत्य धर्मावलंबी
बत असि=	श्रेष्ठ है
याम्=	जिस ब्रह्मविषयणी बुद्धि को
आपः=	प्राप्त हुआ है तू
तत्=	वह
अन्येन=	आत्मवेत्ता करके
एव=	ही
प्रोक्ता=	उपदेश की हुई
सुज्ञानाय=	आत्मज्ञानार्थ
+ भवति=	होती है
नचिकेतः=	हे नचिकेता

त्वादृक्=तेरे समान	प्रष्टा=प्रश्नकर्ता
नः=हमको	+ अपि=भी
+ अन्यः=अन्य	भूयात्=मिलै

मूलम् ।

जानाम्यहꣳ शेवधिरित्यनित्यं न ह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवन्तत् ततो मया नाचिकेतश्चितोऽग्निरनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

जानामि, अहम्, शेवधिः, इति, अनित्यम्, न, हि, अध्रुवैः, प्राप्यते, हि, ध्रुवम्, तत्, ततः, मया, नाचिकेतः, चितः, अग्निः, अनित्यैः, द्रव्यैः, प्राप्तवान्, अस्मि, नित्यम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
शेवधिः	स्वर्गादि कर्म फल	मया	मुझ करके
अनित्यम्	अनित्य है	नाचिकेतः	नाचिकेत संज्ञक
इति	ऐसा	अग्निः	अग्नि
अहम्	मैं	अनित्यैः	अनित्य
जानामि	जानता हूं	द्रव्यैः	पशु आदि द्रव्यों करके
हि	क्योंकि	चितः	सेवन की गई है
अध्रुवैः	अनित्य यज्ञ अग्निहोत्रादि कर्म से	च	और
हि	निश्चय करके	+ तस्मात्	इस कारण
ध्रुवम्	नित्य साक्षी आत्मा	+ अहम्	मैं
न प्राप्यते	नहीं प्राप्त होता है	नित्यम्	नित्य यम पदवी को
ततः	इसलिये	प्राप्तवान्	प्राप्त हुआ
		अस्मि	हूँ

नोट—यमराज भगवान् कहते हैं कि मैंने ब्रह्मज्ञान के अनन्तर नचिकेत नामक अग्नि के उपासना द्वारा यमराजपदवी को नित्य जान कर अपने को प्राप्त किया है सो उसको तू त्यागता भया इसलिये तू हे नचिकेता धन्य है धन्य है ॥

मूलम् ।

कामस्याप्तिञ्जगतः प्रतिष्ठां क्रतोरानन्त्यमभयस्य पारम् स्तोम मह-दुरुगायम्प्रतिष्ठां दृष्ट्वा धृत्या धीरो नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

कामस्य, आप्तिम्, जगतः, प्रतिष्ठाम्, क्रतोः, आनन्त्यम्, अभयस्य, पारम्, स्तोम, महत्, उरुगायम्, प्रतिष्ठाम्, दृष्ट्वा, धृत्या, धीरः, नचिकेतः, अत्यस्राक्षीः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
कामस्य	कामना की
आप्तिम्	प्राप्ति को
+ च	और
जगतः	जगत् के
प्रतिष्ठाम्	आश्रय को
+ च	और
क्रतोः	यज्ञ के
आनन्त्यम्	अनंतफलको
च	और
अभयस्य	अभय याने स्वर्ग के
पारम्	पार को अर्थात् स्वर्ग की प्राप्ति को
च	और
स्तोम महत्	स्तुत्य ऐश्वर्य को
च	और
उरुगायम्	भारीगति को
च	और
प्रतिष्ठाम्	प्रतिष्ठा को
दृष्ट्वा	देख करके
धृत्या	धैर्यता से
धीरः	तू बुद्धिमान्
नचिकेतः	हे नचिकेता
अत्यस्राक्षीः	त्यागकरता भया

मूलम् ।

तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं गुहाहितङ्गह्वरेष्ठं पुराणम् अध्यात्मयोगाधि-गमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

तम्, दुर्दर्शम्, गूढम्, अनुप्रविष्टम्, गुहाहितम्, गह्वरेष्ठम्, पुराणम्, अध्यात्मयोगाधिगमेन, देवम्, मत्वा, धीरः, हर्षशोकौ, जहाति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तम्=	उस
दुर्दर्शम्=	दुर्दर्श
गूढम्=	सघन
अनुप्रविष्टम्=	छिपे हुये
गुहाहितम्=	बुद्धिमें रखे हुये
च=	और
गह्वरेष्ठम्=	अन्तःकरणरूपी गुहा में स्थित हुये
पुराणम्=	सनातन
देवम्=	आत्मा को
अध्यात्मयोगाधिगमेन=	आत्मविद्या के योग से
मत्वा=	अनुभव करके
धीरः=	धीरपुरुष
हर्षशोकौ=	हर्षशोकको
जहाति=	त्याग करता है

मूलम् ।

एतच्छ्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रवृह्य धर्म्यमणुमेतमाप्य स मोदते मोदनीयꣳ हि लब्ध्वा विवृतꣳ हि सद्म नचिकेतसम्मन्ये ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

एतत्, श्रुत्वा, सम्परिगृह्य, मर्त्यः, प्रवृह्य, धर्म्यम्, अणुम्, एतम्, आप्य, सः, मोदते, मोदनीयम्, हि, लब्ध्वा, विवृतम्, हि, सद्म, नचिकेतसम्, मन्ये ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत्=	इस
धर्म्यम्=	धर्म्म करके प्राप्य आत्मा को
श्रुत्वा=	सुन करके
संपरिगृह्य=	मनन करके
प्रवृह्य=	पृथक् करके
च=	और
एतम्=	इस
अणुम्=	अतिसूक्ष्म आत्मा को
आप्य=	प्राप्त हो करके
च=	और
मोदनीयम्=	हर्षकरनेयोग्य आत्माको
लब्ध्वा=	पाकरके
सः=	आत्मवेत्ता
मर्त्यः=	पुरुष
मोदते=	प्रसन्नहोता है
हि=	इस लिये
हि=	निश्चय करके
नचिकेतसम्=	तुझ नचिकेता को
सद्म=	ब्रह्म लोक के द्वार के
विवृतम्=	सम्मुख
मन्ये=	मानता हूं मैं

मूलम् ।

अन्यत्र धर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात् अन्यत्र भूताच्च भव्याच्च यत्तत्पश्यसि तद्वद ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

अन्यत्र, धर्मात्, अन्यत्र, अधर्मात्, अन्यत्र, अस्मात्, कृताकृतात्, अन्यत्र, भूतात्, च, भव्यात्, च, यत्, तत्, पश्यसि, तत्, वद ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
धर्मात्	धर्म से
अन्यत्र	पृथक् है
+ आत्मा	आत्मा
+ च	और
अधर्मात्	अधर्म से
अन्यत्र	पृथक् है
+ आत्मा	आत्मा
+ च	और
अस्मात्	इस
कृताकृतात्	कार्य कारण से
+ अपि	भी
अन्यत्र	पृथक् है
+ आत्मा	आत्मा
च	और
भूतात्	भूतकाल से
च	और
भव्यात्	भविष्यत् काल से
अन्यत्र	पृथक् है
यत्	जिस
तत्	वस्तु को
पश्यसि	जानते हो आप
तत्	उसको
वद	कहिये

नोट—नचिकेताके प्रश्न का उत्तर यमराज भगवान् अगले मंत्रों में देते हैं ॥

मूलम् ।

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपाꣳसि सर्वाणि च यद्वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदꣳ संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

सर्वे, वेदाः, यत्, पदम्, आमनन्ति, तपांसि, सर्वाणि, च, यत्, वदन्ति, यत्, इच्छन्तः, ब्रह्मचर्यम्, चरन्ति, तत्, ते, पदम्, संग्रहेण, ब्रवीमि, ओम्, इति, एतत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सर्वे	सब
वेदाः	वेद
यत्	जिस
पदम्	पदको
आमनन्ति	प्रतिपादन करते हैं
च	और
सर्वाणि	सब
तपांसि	तपस्या
यत्	जिसको
वदन्ति	प्रतिपादन करते हैं
च	और
यत्	जिसको
इच्छन्तः	इच्छा करते हुए
मुमुक्षवः	मुमुक्षुजन
ब्रह्मचर्य्यम्	ब्रह्मचर्य्य को
चरन्ति	करते हैं
तत्	उस
पदम्	पदको
ते	तेरे लिये
संग्रहेण	संक्षेप से
ब्रवीमि	कहता हूं मैं
एतत्	उसी पदको
ओम्	ओम्
इति	करके भी
वदन्ति	कहते हैं

मूलम् ।

एतद्ध्येवाक्षरम्ब्रह्म एतदेवाक्षरम् परम् एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ।

एतत्, हि, एव, अक्षरम्, ब्रह्म, एतत्, एव, अक्षरम्, परम्, एतत्, हि, एव, अक्षरम्, ज्ञात्वा, यः, यत्, इच्छति, तस्य, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत्	यही
एव हि	निश्चय करके
अक्षरम्	नाशरहित
ब्रह्म	अपर ब्रह्म है
+ च	और
एतत् एव	यही
अक्षरम्	अविनाशी
परम्	परब्रह्म है
एतत् एव	इसही
अक्षरम्	अक्षरको
ज्ञात्वा	जान करके
+ यः	जो

यत्=जिसको	तत्=वह
इच्छति=चाहता है	भवति=प्राप्त होता है
तस्य=उसी को	

मूलम् ।

एतदालम्बनꣳ श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥ १७ ॥

पदच्छेदः ।

एतत्, आलम्बनम्, श्रेष्ठम्, एतत्, आलम्बनम्, परम्, एतत्, आलम्बनम्, ज्ञात्वा, ब्रह्मलोके, महीयते ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत्=यह ॐकार	+ च=और
आलम्बनम्=आलम्बन	एतत्=इस
श्रेष्ठम्=श्रेष्ठ है	आलम्बनम्=आलम्बन
+ च=और	ॐकार को
एतत्=यह	ज्ञात्वा=जान करके
आलम्बनम्=आलम्बन	ब्रह्मलोके=ब्रह्मलोक में
परम्=उत्कृष्ट है	महीयते=पूज्य होता है

मूलम् ।

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् अजो-नित्यः शाश्वतोयम्पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ १८ ॥

पदच्छेदः ।

न, जायते, म्रियते, वा, विपश्चित्, न, अयम्, कुतश्चित्, न, बभूव, कश्चित्, अजः, नित्यः, शाश्वतः, अयम्, पुराणः, न, हन्यते, हन्यमाने, शरीरे ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ आत्मा=आत्मा	वा=और
न जायते=नहीं उत्पन्न होता है	न=नहीं
	म्रियते=मरता है

+ परन्तु=परन्तु
विपश्चित्=सर्वज्ञ है
अयम्=यह आत्मा
कुतश्चित्=किसी से
कश्चित्=कभी
न बभूव=नहीं हुआ है
तस्मात् कारणात् =इस कारण से
अयम्=यह आत्मा
अजः=अज याने जन्म रहित है
नित्यः=नित्य है
शाश्वतः=नाशरहित है
पुराणः=आदि है
अयम्=यह आत्मा
शरीरे=शरीर के
हन्यमाने=नाश होने पर भी
न हन्यते=नहीं नाश होता है

मूलम् ।

हन्ता चेन्मन्यते हन्तुꣳ हतश्चेन्मन्यते हतम् उभौ तौ न विजानीतो नायꣳ हन्ति न हन्यते ॥ १९ ॥

पदच्छेदः ।

हन्ता, चेत्, मन्यते, हन्तुम्, हतः, चेत्, मन्यते, हतम्, उभौ, तौ, न, विजानीतः, न, अयम्, हन्ति, न, हन्यते ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

चेत्=अगर
हन्ता=मारने वाला पुरुष
हन्तुम्=हननकरने को आत्मा
मन्यते=मानता है
च=और
हतः=मारा हुआ पुरुष
हतम्=हनन क्रिया के कर्म को आत्मा
मन्यते=मानता है तो
तौ उभौ=वे दोनों
न विजानीतः=नहीं जानते हैं क्योंकि
अयम्=यह आत्मा
न हन्ति=न तो मारता है
च=और
न हन्यते=न मरता है

मूलम् ।

अणोरणीयान् महतो महीयानात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् । तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान् महिमानमात्मनः ॥२०॥

पदच्छेदः ।

अणोः, अणीयान्, महतः, महीयान्, आत्मा, अस्य, जन्तोः, निहितः, गुहायाम्, तम्, अक्रतुः, पश्यति, वीतशोकः, धातुः, प्रसादात्, महिमानम्, आत्मनः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अणोः	छोटेसे
अणीयान्	अति छोटा
महतः	बड़े से
महीयान्	अति बड़ा
आत्मा	आत्मा है
अस्य	इस
जन्तोः	जीव के
गुहायाम्	हृदयरूपी गुहा विषे
+ सः	वह
निहितः	स्थित है
च	और
अक्रतुः	निष्काम
वीतशोकः	शोकरहित पुरुष
धातुः प्रसादात्	मन के प्रसाद से
तम्	उस
आत्मनः	अपने
महिमानम्	महिमा को अथवा अपने आत्मा को
पश्यति	देखता है

मूलम् ।

आसीनो दूरं व्रजति शयानो याति सर्वतः कस्तम्मदामदं देवं मदन्यो ज्ञातुमर्हति ॥ २१ ॥

पदच्छेदः ।

आसीनः, दूरम्, व्रजति, शयानः, याति, सर्वतः, कः, तम्, मदामदम्, देवम्, मदन्यः, ज्ञातुम्, अर्हति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
आत्मा	आत्मा
आसीनः	स्थितहुआ हुआ
दूरम्	दूर
व्रजति	जाता है
च	और
शयानः	सोया हुआ
सर्वतः	सब तरफ
याति	फिरता है

तम्=तिस	मदन्यः=मेरसे अन्य
मदामदम्=शरीरादि उपाधि के संबंधवालेहर्षशोकवान्	कः=कौन
देवम्=देव को	ज्ञातुम्=जानने को
	अर्हति=समर्थ होसक्ता है

नोट—यह आत्मा अचल स्थित हैं परन्तु मनआदि उपाधि साथ मिलकर ब्रह्मलोक पर्यन्त जाता है वैसेही स्वप्नमें इन्द्रियों के साथ मिल कर अनेक विषयों में रमण करता है ॥

मूलम् ।

अशरीरꣳ शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम् महान्तम् विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति ॥ २२ ॥

पदच्छेदः ।

अशरीरम्, शरीरेषु, अनवस्थेषु, अवस्थितम्, महान्तम्, विभुम्, आत्मानम्, मत्वा, धीरः, न, शोचति ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
शरीरेषु=शरीरों विषे	विभुम्=व्यापक
अशरीरम्=शरीर रहित है	आत्मानम्=आत्मा को
अनवस्थेपु=अनित्यों विषे	मत्वा=जान करके
अवस्थिम्=नित्य है	धीरः=बुद्धिमान् पुरुष
+ एवम्=ऐसे	न शोचति=नहीं शोक को प्राप्त होता है
महान्तम्=महान्	

मूलम् ।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुꣳस्वाम् ॥ २३ ॥

पदच्छेदः ।

न, अयम्, आत्मा, प्रवचनेन, लभ्यः, न, मेधया, न, बहुना, श्रुतेन, यम्, एव, एषः, वृणुते, तेन, लभ्यः, तस्य, एषः, आत्मा, विवृणुते, तनुम्, स्वाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अयम्	यह
आत्मा	आत्मा
प्रवचनेन	बहुत वेदाध्ययन करने से
न लभ्यः	नहीं प्राप्त होने योग्य है
च	और
मेधया	ग्रंथार्थ धारणा शक्ति से
न	नहीं
लभ्यः	प्राप्त होने योग्य है
च	और
बहुना	बहुत
श्रुतेन	शास्त्र के श्रवण करने से
अपि	भी
न	नहीं
लभ्यः	प्राप्त होने योग्य है
यम्	जिसको
एव	निश्चय करके
एषः	यह मुमुक्षु
वृणुते	इच्छा करता है
तेन	तिसही करके
लभ्यः	पाने योग्य है
च	और
तस्य	उसी को
एषः	यह
आत्मा	आत्मा
स्वाम्	अपने
तनुम्	स्वरूप को
विवृणुते	प्रकाश करता है

मूलम् ।

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः ना शान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् ॥ २४ ॥

पदच्छेदः ।

न, अविरतः, दुश्चरितात्, न, अशान्तः, न, असमाहितः, न, अशान्तमानसः, वा, अपि, प्रज्ञानेन, एनम्, आप्नुयात् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
दुश्चरितात्	दुष्कृत कर्म से
अविरतः	नहीं निवृत्त भया है जो
अशान्तः	नहीं शान्त हुआ है जो
असमाहितः	नहीं एकाग्र किया है चित्तको जिसने
वा	और
अशान्तमानसः	नहीं हुआ है शान्त मन जिसका

एतैः पुरुषैः=ऐसे पुरुषों करके
आत्मा=आत्मा
न लभ्यः=प्राप्त होने योग्य नहीं है
प्रज्ञानेन=ज्ञान करके
अपि=ही
एनम्=इस आत्मा को
पुरुषः=पुरुष
आप्नुयात्=प्राप्त होता है

मूलम् ।

यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनम् मृत्युर्यस्योपसेचनं क इत्था वेद यत्र सः ॥ २५ ॥

द्वितीयावल्ली समाप्ता ।

पदच्छेदः ।

यस्य, ब्रह्म, च, क्षत्रम्, च, उभे, भवतः, ओदनम्, मृत्युः, यस्य, उपसेचनम्, कः, इत्था, वेद, यत्र, सः ।

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	और
यस्य	जिसका
ब्रह्म	ब्राह्मण
च	और
क्षत्रम्	क्षत्रिय
उभे	दोनों
ओदनम्	भात
भवतः	होते हैं
+ च	और
यस्य	जिसका
मृत्युः	मृत्यु
उपसेचनम्	दाल साग है
कः= यः	जो
इत्था	इस प्रकार
यत्र	इस विषे
वेद	जानता है
सः	सोई
आत्मा	आत्मा
भवति	होता है

इति कठवल्लीउपनिषद्प्रथमाध्याये द्वितीया वल्ली भाषाटीका समाप्ता ॥

मूलम् ।

ॐ ऋतं पिबन्तौ स्वकृतस्य लोके गुहाम्प्रविष्टौ परमे परार्द्धे छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

ऋतम्, पिबन्तौ, स्वकृतस्य, लोके, गुहाम्, प्रविष्टौ, परमे, परार्द्धे, छायातपौ, ब्रह्मविदः, वदन्ति, पञ्चाग्नयः, ये, च, त्रिणाचिकेताः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सुकृतस्य	अपने किये हुये कर्मों के	तौ	उन दोनों को
ऋतम्	सतरूप फल को	ये	जो
पिबन्तौ	पान किये हुये हैं जो	ब्रह्मविदः	ब्रह्मवित् हैं
च	और	च	और
लोके	शरीर में	पञ्चाग्नयः	गृहस्थी हैं
परमे	शुद्ध	च	और
परार्द्धे	हृदयाकाश विषे	त्रिणाचिकेताः	नाचिकेत नामक अग्नि के उपासक हैं
गुहाम्	बुद्धिरूपी गुहा को	ते	वे
प्रविष्टौ	जीव और साक्षीरूप होकर प्राप्त हैं जो	छायातपौ	छाया धूपवत्
		वदन्ति	कहते हैं

मूलम् ।

यः सेतुरीजानानामक्षरम् ब्रह्म यत्परम् अभयम् तितीर्षताम्पारं नाचिकेतꣳ शकेमहि ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

यः, सेतुः, ईजानानाम्, अक्षरम्, ब्रह्म, यत्, परम्, अभयम्, तितीर्षताम्, पारम्, नाचिकेतम्, शकेमहि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्=जो		यः=जो	
परम्=परम		तितीर्षताम्=संसार से तरनेवालोंके	
अक्षरम्=अक्षर		अभयम्=निर्भय	
ब्रह्म=ब्रह्म है		पारम्=पार होने के लिये	
तत्=सो		नाचिकेतम्=नचिकेता नामक अग्नि है	
ईजानानाम्=यज्ञ करनेवालों को		तत्सेतुम्=उसको सेतु	
सेतुः=सेतु है		शकेमहि=जानते हैं हम	
च=और			

मूलम् ।

आत्मानꣳ रथिनं विद्धि शरीरꣳ रथमेव तु बुद्धिन्तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

आत्मानम्, रथिनम्, विद्धि, शरीरम्, रथम्, एव, तु, बुद्धिम्, तु, सारथिम्, विद्धि, मनः, प्रग्रहम्, एव, च ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
आत्मानम्=आत्मा को		बुद्धिम्=बुद्धि को	
रथिनम्=रथ का स्वामी		सारथिम्=सारथी	
विद्धि=जान तू		विद्धि=जान तू	
+ च=और		च=और	
शरीरम्=शरीर को		मनः=मन को	
रथम्=रथ		प्रग्रहम्=बाग	
एव=निश्चय करके		एव=निश्चय करके	
+ विद्धि=जान तू		विद्धि=जान तू	
तु=और			

मूलम् ।

इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान् आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम् भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

इन्द्रियाणि, हयान्, आहुः, विषयान्, तेषु, गोचरान्, आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्, भोक्ता, इति, आहुः, मनीषिणः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इन्द्रियाणि	इन्द्रियों को
हयान्	घोड़े
आहुः	कहते हैं
विषयान्	विषयों को
तेषु	उनके
गोचरान्	मार्ग
आहुः	कहते हैं
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्	शरीर इन्द्रिय मन के सहित
आत्मानम्	आत्मा को
मनीषिणः	विवेकी जन
भोक्ता इति	भोक्ता करके
आहुः	कहते हैं

मूलम् ।

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन मनसा सदा तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वा इव सारथेः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

यः, तु, विज्ञानवान्, भवति, अयुक्तेन, मनसा, सदा, तस्य, इन्द्रियाणि, अवश्यानि, दुष्टाश्वाः, इव, सारथेः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु	और
यः	जो पुरुष
अयुक्तेन	अयुक्त
मनसा	मन करके
सदा	सदा
अविज्ञानवान्	अविवेकी
भवति	होता है
तस्य	उसकी
इन्द्रियाणि	इन्द्रियां
सारथेः	सारथि के
दुष्टाश्वाः	दुष्ट घोड़ों के
इव	समान
अवश्यानि	बेवश
भवन्ति	होती हैं

मूलम् ।

यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

यः, तु, विज्ञानवान्, भवति, युक्तेन, मनसा, सदा, तस्य, इन्द्रियाणि, वश्यानि, सदश्वाः, इव, सारथेः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु=और		तस्य=उसकी	
यः=जो पुरुष		इन्द्रियाणि=इन्द्रियां	
युक्तेन=युक्त		सारथेः=सारथी के	
मनसा=मन करके		सदश्वाः इव=श्रेष्ठ घोड़ों के समान	
सदा=सदैव		वश्यानि=वशीभूत	
विज्ञानवान्=विवेकी		भवन्ति=होती हैं	
भवति=होता है			

मूलम् ।

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्यमनस्कः सदाशुचिः न स तत्पदमाप्नोति संसारं चाधिगच्छति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

यः, तु, अविज्ञानवान्, भवति, अमनस्कः, सदा, अशुचिः, न, सः, तत्, पदम्, आप्नोति, संसारम्, च, अधिगच्छति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु=और		अमनस्कः=मन की एकाग्रता से रहित	
यः=जो		सदा=सदैव	
अविज्ञानवान्=विवेक रहित		अशुचिः=अपवित्र	
च=और			

भवति=होता है	आप्नोति=प्राप्त होता है
सः=सो	च=परन्तु
तत्पदम्=उस पद को यानी मोक्ष को	संसारम्=संसार को ही
न=नहीं	अधिगच्छति=प्राप्त होता है

मूलम् ।

यस्तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो न जायते ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

यः, तु, विज्ञानवान्, भवति, समनस्कः, सदा, शुचिः, सः, तु, तत्, पदम्, आप्नोति, यस्मात्, भूयः, न, जायते ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु=और	तु=निश्चय करके
यः=जो	तत्=उस
विज्ञानवान्=विवेकी	पदम्=पद को
समनस्कः=एकाग्र चित्तवाला	आप्नोति=प्राप्त होता है
सदा=सदा	यस्मात्=जिस करके
शुचिः=पवित्र	भूयः=फिर
भवति=होता है	न=नहीं
सः=वह	जायते=उत्पन्न होता है

मूलम् ।

विज्ञानसारथिर्यस्तु मनः प्रग्रहवान्नरः सोऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोः परमम्पदम् ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

विज्ञानसारथिः, यः, तु, मनः, प्रग्रहवान्, नरः, सः, अध्वनः, पारम्, आप्नोति, तत्, विष्णोः, परमम्, पदम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो
विज्ञानसारथिः	विज्ञान सारथी है
तु	और
मनः	मनरूपी
प्रग्रहवान्	बाग का ग्रहण करने वाला
नरः	पुरुष है
सः	वह
अध्वनः	संसार मार्ग के
पारम्	पार को
आप्नोति	प्राप्त होता है
तत्	सोई
विष्णोः	विष्णु का
परमम्	परम
पदम्	पद है

मूलम् ।

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः मनसश्च परा बुद्धि-बुद्धेरात्मा महान् परः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

इन्द्रियेभ्यः, पराः, हि, अर्थाः, अर्थेभ्यः, च, परम्, मनः, मनसः, च, परा, बुद्धिः, बुद्धेः, आत्मा, महान्, परः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इन्द्रियेभ्यः	इन्द्रियों से
पराः	परे
हि	निश्चय करके
अर्थाः	विषय हैं क्योंकि इन्द्रियों की प्रवृत्ति विषयों के आधीन है
अर्थेभ्यः	विषयों से
परम्	परे
मनः	मन है
च	और
मनसः	मन से
परा	परे याने सूक्ष्म
बुद्धिः	बुद्धि है
च	और
बुद्धेः	बुद्धि से
परः	परे
महान्	महान्
आत्मा	हिरण्यगर्भ है

मूलम् ।

महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः पुरुषान्न परं किञ्चित्सा काष्ठा सा परा गतिः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

महतः, परम्, अव्यक्तम्, अव्यक्तात्, पुरुषः, परः, पुरुषात्, न, परम्, किंचित्, सा, काष्ठ, सा, परा, गतिः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
महतः	हिरण्यगर्भ से
परम्	परे
अव्यक्तम्	अव्याकृत है
अव्यक्तात्	अव्याकृतवाले माया से
परः	परे
पुरुषः	आत्मा है
पुरुषात्	आत्मा से
परम्	परे
न किञ्चित्	कुछ नहीं है
सा	सोई
काष्ठा	अवधि है यानी परम आश्रय है
च	और
सा	सोई
परा	सर्वोत्तम
गतिः	गति है अर्थात् प्राप्त होने योग्य है

मूलम् ।

एष सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

एष, सर्वेषु, भूतेषु, गूढात्मा, न, प्रकाशते, दृश्यते, तु, अग्रया, बुद्ध्या, सूक्ष्मया, सूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः	यह
गूढात्मा	गूढात्मा
सर्वेषु	सब
भूतेषु	भूतों विषे

न=नहीं
प्रकाशते=प्रकाशता है यानी सबको नहीं देखाई देता है
तु=परन्तु
अग्रया=एकाग्र
सूक्ष्मया=सूक्ष्म
बुद्ध्या=बुद्धिद्वारा
सूक्ष्मदर्शिभिः=सूक्ष्मदर्शी ज्ञानियों करके
दृश्यते=देखा जाता है याने अनुभव किया जाता है

मूलम् ।

यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

यच्छेत्, वाङ्मनसी, प्राज्ञः, तत्, यच्छेत्, ज्ञाने, आत्मनि, ज्ञानम्, आत्मनि, महति, नियच्छेत्, तत्, यच्छेत्, शान्ते, आत्मनि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
प्राज्ञः	बुद्धिमान् पुरुष
वाक्	वाणी को
मनसी	मन विषे
यच्छेत्	लय करै
च	और
तत्	उस मन को
ज्ञाने	ज्ञानरूपी
आत्मनि	आत्मा याने बुद्धि में
यच्छेत्	लय करै
च	और
ज्ञानम्	ज्ञान याने बुद्धि को
महति	महान्
आत्मनि	हिरण्यगर्भ में
नियच्छेत्	लय करै
+ च	और
तत्	तिस महानात्मा हिरण्यगर्भ को
शान्ते	शान्त
आत्मनि	अधिष्ठान आत्मा में
यच्छेत्	लय करै

मूलम् ।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गम्पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य, वरान्, निबोधत, क्षुरस्य, धारा, निशिता, दुरत्यया, दुर्गम्, पथः, तत्, कवयः, वदन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ हे जन्तवः	हे मनुष्यो	ज्ञानम्	ज्ञान
+ यूयम्	तुम	क्षुरस्य	छुरी की
उत्तिष्ठत	उठो	निशिता	तीक्ष्ण
जाग्रत	जागो	धारा	धारकी तरह
च	और	दुरत्यया	कठिन है
वरान्	श्रोत्रिय ब्रह्मनेष्ठि आचार्य को	च	और
प्राप्य	प्राप्त होकर	तत्	उसीको
+ आत्मानम्	आत्मा को	कवयः	विद्वान् लोक
निबोधत	जानो	दुर्गम् पथः	दुर्गम मार्ग
		वदन्ति	कहते हैं

मूलम् ।

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसन्नित्यमगन्धवच्च यत् अनाद्यनन्तम्महतः परन्ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

अशब्दं, अस्पर्शम्, अरूपम्, अव्ययम्, तथा, अरसम्, नित्यम्, अगन्धवत्, च, यत्, अनादि, अनंतम्, महतः, परम्, ध्रुवम्, निचाय्य, तत्, मृत्युमुखात्, प्रमुच्यते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो	तथा	और
अशब्दम्	शब्दरहित है	अरसम्	रसरहित है
अस्पर्शम्	स्पर्शरहित है	नित्यम्	नित्य है
अरूपम्	रूपरहित है	अगन्धवत्	गन्धरहित है
अव्ययम्	अविनाशी है	च	और

अनादि=आदिरहित है
अनन्तम्=अंतरहित है
महतः=महत्तत्त्व से
परम्=परे है
ध्रुवम्=अचल है
तत्=तिसको
निचाय्य=जानकरके ।
पुरुषः=पुरुष
मृत्युमुखात्=मृत्यु के मुख से
प्रमुच्यते=छूटजाता है

मूलम् ।

नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तं सनातनम् उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ।

नाचिकेतम्, उपाख्यानम्, मृत्युप्रोक्तम्, सनातनम्, उक्त्वा, श्रुत्वा, च, मेधावी, ब्रह्मलोके, महीयते ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

मृत्युप्रोक्तम्=मृत्युकरके कही हुई
सनातनम्=सनातन
नाचिकेतम्=नचिकेतासम्बन्धी
उपाख्यानम्=आख्यायिका को
उक्त्वा=कथन करके
च=और
श्रुत्वा=श्रवण करके
मेधावी=बुद्धिमान् पुरुष
ब्रह्मलोके=ब्रह्मलोक में
महीयते=महिमा को प्राप्त होता है

मूलम् ।

य इमं परमं गुह्यं श्रावयेद् ब्रह्मसंसदि प्रयतः श्राद्धकाले वा तदानन्त्याय कल्पते तदानन्त्याय कल्पते इति ॥ १७ ॥

तृतीया वल्ली समाप्ता ।

पदच्छेदः ।

यः, इमम्, परमम्, गुह्यम्, श्रावयेत्, ब्रह्मसंसदि, प्रयतः, श्राद्धकाले, वा, तत्, आनन्त्याय, कल्पते, तत्, 'आनन्त्याय' कल्पते, इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः=जो		श्राद्धकाले=श्राद्धके समय विषे	
इमम्=इस		श्रावयेत्=सुनावै तो	
परमम्=परम		तत्=वह सुनाना	
गुह्यम्=गोप्यनीय विद्या को		आनन्त्याय=अनन्त फल के अर्थ	
ब्रह्मसंसदि=ब्राह्मणों की सभा में		कल्पते=माना जाता है	
वा=अथवा		आनन्त्याय=अनन्त फल के अर्थ	
प्रयतः=पवित्र होकर		कल्पते=माना जाता है	

इति कठवल्लीउपनिषद्प्रथमाध्याये तृतीया वल्ली भाषाटीका समाप्ता ॥

इति प्रथमोध्यायः समाप्तः ॥

मूलम् ।

ॐ पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूस्तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन् कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ॥१॥

पदच्छेदः ।

पराञ्चि, खानि, व्यतृणत्, स्वयम्भूः, तस्मात्, पराङ्, पश्यति, न, अन्तरात्मन्, कश्चित्, धीरः, प्रत्यक्, आत्मानम्, ऐक्षत्, आवृत्तचक्षुः, अमृतत्वम्, इच्छन् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
स्वयम्भूः=परमेश्वर		कश्चित्=कोई विरला	
खानि=इन्द्रियों को		धीरः=धीर पुरुष	
पराञ्चि=बाह्य विषयों की ओर जानेवाली		अमृतत्वम्=अमरभाव की	
व्यतृणत्=रचता भया		इच्छन्=इच्छा करता हुआ	
तस्मात्=तिसी कारण से		आवृत्तचक्षुः=चक्षु इन्द्रियों को विषयों से हटा कर	
पराङ्=विषयों को ही		प्रत्यक्=अंतर	
पश्यति=देखती हैं		आत्मानम्=आत्मा को	
अन्तरात्मन्=अन्तरात्मा को न=नहीं देखती हैं		ऐक्षत=देखता है	

मूलम् ।

पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्
अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

पराचः, कामान्, अनुयन्ति, बालाः, ते, मृत्योः, यन्ति, विततस्य, पाशम्, अथ, धीराः, अमृतत्वम्, विदित्वा, ध्रुवम्, अध्रुवेषु, इह, न, प्रार्थयन्ते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पराचः	बाह्य
कामान्	विषयों को
बालाः	अज्ञानी पुरुष
अनुयन्ति	प्राप्त होते हैं
च	और
ते	वेही
मृत्योः	मृत्यु के
विततस्य	फैले हुये
पाशम्	रस्सा को
यन्ति	प्राप्त होते हैं
अथ	और
धीराः	विवेकी पुरुष
ध्रुवम्	नित्य
अमृतत्वम्	अमररूप आत्मा को
विदित्वा	जानकरके
इह	इस संसार विषे
अध्रुवेषु	अनित्य भोगों को
न प्रार्थयन्ते	नहीं चाहते हैं

मूलम् ।

येन रूपं रसं गन्धं शब्दान् स्पर्शांश्च मैथुनान् एतेनैव विजानाति किमत्र परिशिष्यते एतद्वै तत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

येन, रूपम्, रसम्, गन्धम्, शब्दान्, स्पर्शान्, च, मैथुनान्, एतेन, एव, विजानाति, किम्, अत्र, परिशिष्यते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
येन	जिस साक्षिआत्मा करके
रूपम्	रूपको
रसम्	रसको
गन्धम्	गन्धको
शब्दान्	शब्दों को
स्पर्शान्	स्पर्शों को
च	और
मैथुनान्	मैथुनों को
एवं	ठीक ठीक
+ पुरुषः	पुरुष
विजानाति	अच्छे प्रकार जानता है
तत्	सोई
वै	निश्चय करके
एतत्	यह ब्रह्म है
च	और
एतेन	इस आत्मा से और
किम्	क्या
अत्र	यहां
परिशिष्यते	जानने को शेष रहता है याने जानने योग्य कुछ भी बाक़ी नहीं रहता है

मूलम् ।

स्वप्नांतं जागरितान्तञ्चोभौ येनानुपश्यति महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

स्वप्नान्तम्, जागरितान्तम्, च, उभौ, येन, अनुपश्यति, महान्तम्, विभुम्, आत्मानम्, मत्वा, धीरः, न, शोचति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
उभौ	दोनों यानी
स्वप्नांतम्	स्वप्नकाल के पदार्थों को
च	और
जागरितान्तम्	जाग्रतकाल के पदार्थों को
येन	जिस साक्षि चेतन करके
+ पुरुषः	पुरुष
अनुपश्यति	स्पष्ट देखता है
एतत्	वही
वै	निश्चय करके
तत्	यह ब्रह्म है
+ च	और
महान्तम्	महान्
विभुम्	व्यापक

आत्मानम्=आत्मा को
मत्वा=जान करके
धीरः=धीर पुरुष
न शोचति=नहीं शोच को प्राप्त होता है

मूलम् ।

य इमं मध्वदं वेद आत्मानं जीवमन्तिकात् ईशानम्भूतभव्यस्य न ततो विजिगुप्सते एतद् वै तत् ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

यः, इमम्, मध्वदम्, वेद, आत्मानम्, जीवम्, अन्तिकात्, ईशानम्, भूतभव्यस्य, न, ततः, विजुगुप्सते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो कोई	वेद	जानता है
इमम्	इस	सः	वह
मध्वदम्	कर्मफल का भोक्ता	ततः	फिर
अन्तिकात्	समीपवर्ती	न विजुगुप्सते	अपने आपकी रक्षाकी इच्छा नहीं करता है
भूतभव्यस्य	कालत्रय का	तत्	सोई आत्मा
ईशानम्	नियामक	वै	निश्चय करके
जीवम्	जीवरूप	एतत्	यह ब्रह्म है
आत्मानम्	आत्मा को		

मूलम् ।

यः पूर्वन्तपसो जातमद्भ्यः पूर्वमजायत गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तं यो भूतेभिर्व्यपश्यत एतद्वै तत् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

यः, पूर्वम्, तपसः, जातम्, अद्भ्यः, पूर्वम्, अजायत, गुहाम्, प्रविश्य, तिष्ठन्तम्, यः, भूतेभिः, व्यपश्यत, एतत्, वै, तत् ।

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः=जो		गुहाम्=हृदयाकाशरूप गुहाविषे	
पूर्वम्=पहले		प्रविश्य=प्रवेशकरके	
तपसः=ब्रह्मसे		तिष्ठन्तम्=स्थित है	
जातम्=उत्पन्न हुआ है		+ तद्धिरण्यम्=तिस हिरण्यगर्भ को	
च=और		यः=जो पुरुष	
अद्भ्यः=जलादि पंचतत्त्वों से		व्यपश्यत=देखता है	
पूर्वम्=पूर्व		तत्=सोई	
अजायत=उत्पन्न हुआ है		वै=निश्चय करके	
च=और		एतत्=यह ब्रह्म है	
यः=जो			
भूतेभिः=कार्यकारणसंघात के सहित			

मूलम् ।

या प्राणेन सम्भवत्यदितिर्देवतामयी गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तीं या भूतेभिर्व्यजायत एतद्वै तत् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

या, प्राणेन, सम्भवति, अदितिः, देवतामयी, गुहाम्, प्रविश्य, तिष्ठन्तीम्, या, भूतेभिः, व्यजायत, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
या=जो		भूतेभिः=सब भूतों के साथ तादात्म्यताको प्राप्त होकर के	
देवतामयी=देवतारूप		व्यजायत=उत्पन्न हुआ है	
प्राणेन=प्राणकरके		च=और	
सम्भवति=उत्पन्न होताहै		गुहाम्=हृदयाकाशविषे	
+ सा=सोई			
अदितिः=अदितिरूप है			
च या=और जो			

प्रविश्य=प्रवेश करके	वै=निश्चय करके
तिष्ठन्तीम्=स्थित हैं	एतत्=यह ब्रह्म है
तत्=सोई	

मूलम् ।

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इव सुभृतो गर्भिणीभिः दिवे दिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

अरण्योः, निहितः, जातवेदाः, गर्भः, इव, सुभृतः, गर्भिणीभिः, दिवे, दिवे, ईड्यः, जागृवद्भिः, हविष्मद्भिः, मनुष्येभिः, अग्निः, "एतत्, वै, तत्" ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अरण्योः=दोनों अरणियों विषे	जागृवद्भिः=जाग्रत् स्वभाव वाले याने प्राणायाम के करनेवाले
जातवेदाः=वैश्वानर अग्नि	च=और
निहितः=स्थित है	हविष्मद्भिः=हवन के करने वाले
इव=जैसे	मनुष्येभिः=मनुष्यों करके
गर्भिणीभिः=गर्भवती स्त्री करके	दिवे दिवे=प्रतिदिन
सुभृतः=धारण किया हुआ	ईड्यः=स्तुति करने योग्य है
गर्भः=गर्भ	तत्=वही
+ निहितः=स्थित है	वै=निश्चय करके
च=और	एतत्=यह ब्रह्म है
+ यः=जो	
अग्निः=अग्नि	

मूलम् ।

यतश्चोदेति सूर्य्योऽस्तं यत्र च गच्छति तन्देवाः सर्वेऽर्पितास्तदु नात्येति कश्चन एतद्वै तत् ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

यतः, च, उदेति, सूर्य्यः, अस्तम्, यत्र, च, गच्छति, तम्, देवाः, सर्वे, अर्पिताः, तत्, उ, न, अत्येति, कश्चन, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च=और		देवाः=देवता	
यतः=जिस प्राणवायु अधिदैव करके		अर्पिताः=अर्पित हैं	
सूर्य्यः=सूर्य		उ=और	
उदेति=उदय होता है		तत्=उसको	
च=और		कश्चन=कोई भी	
यत्र=जिस विषे		न=नहीं	
अस्तम्=अस्त को		अत्येति=उल्लंघन कर सक्ता है	
गच्छति=प्राप्त होता है		तत्=सोई	
तम्=तिसी में		वै=निश्चय करके	
सर्वे=सब		एतत्=यह ब्रह्म है	

मूलम् ।

यदेवेह तदमुत्र यदमुत्र तदन्विह मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

यत्, एव, इह, तत्, अमुत्र, यत्, अमुत्र, तत्, अनु, इह, मृत्योः, सः, मृत्युम्, आप्नोति, यः, इह, नाना, इव, पश्यति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्=जो		यत्=जो	
एव=निश्चय करके		अमुत्र=वहां है	
इह=यहां है		तत्=सोई	
तत्=सोई		अन्विह=यहां है	
अमुत्र=वहां है		यः=जो	

इह=इस अद्वैत चेतन विषे
नाना=नानात्व यानी भेद भाव
इव=सा
पश्यति=देखता
सः=सो
मृत्योः=मृत्यु से भी
मृत्युम्=मृत्यु को
आप्नोति=प्राप्त होता है

मूलम् ।

मनसैवेदमाप्तव्यन्नेह नानास्ति किञ्चन मृत्योः स मृत्युङ्गच्छति य इह नानेव पश्यति ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

मनसा, एव, इदम्, आप्तव्यम्, न, इह, नाना, अस्ति, किञ्चन, मृत्योः, सः, मृत्युम्, गच्छति, यः, इह, नाना, इव, पश्यति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मनसा=मन करके	
एव=ही	
इदम्=यह	
आप्तव्यम्=प्राप्त होने योग्य है	
इह=इस ब्रह्म विषे	
किञ्चन=किंचित्मात्र भी	
नाना=नानात्व याने भेद	
न=नहीं	
अस्ति=है	
यः=जो	
इह=इस ब्रह्म विषे	
नाना इव=नानात्व को ही	
पश्यति=देखता है	
सः=वह	
मृत्योः=मृत्यु से भी	
मृत्युम्=मृत्युको यानी पुनःपुनः जन्म मरण को	
गच्छति=प्राप्त होता है	

मूलम् ।

अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति ईशानो भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सते एतद्वै तत् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

अंगुष्ठमात्रः, पुरुषः, मध्ये, आत्मनि, तिष्ठति, ईशानः, भूतभव्यस्य, न, ततः, विजुगुप्सते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अंगुष्ठमात्रः=अंगुष्ठमात्र		ईशानः=प्रेरक है	
पुरुषः=पुरुष		ततः=इस लिये	
आत्मनि=शरीर के		+ सः=वह	
मध्ये=मध्य विषे याने हृदयाकाश में		विजुगुप्सते=रक्षा करने की इच्छा	
तिष्ठति=स्थित है		न=नहीं करता है	
च=और		तत्=सोई	
भूतभव्यस्य=कालत्रय का		वै=निश्चय करके	
		एतत्=यह ब्रह्म है	

मूलम् ।

अंगुष्ठमात्रः पुरुषो ज्योतिरिवाधूमकः ईशानो भूतभव्यस्य स एवाद्य स उ श्वः एतद्वै तत् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

अंगुष्ठमात्रः, पुरुषः, ज्योतिः, इव, अधूमकः, ईशानः, भूतभव्यस्य, सः, एव, अद्य, सः, उ, श्वः, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अंगुष्ठमात्रः=अंगुष्ठमात्र		अद्य=आज वर्त्तमान है	
पुरुषः=पुरुष		उ=और	
अधूमकः=धूमरहित		सः=सोई	
ज्योतिः=अग्नि की		श्वः=कल याने भविष्यत् है	
इव=तरह प्रकाशमान है		ततः=तातें	
च=और जो		तत्=वही	
भूतभव्यस्य=तीनों काल का		वै=निश्चय करके	
ईशानः=नियामक ईश्वर है		एतत्=यह ब्रह्म है	
सः एव=सोई निश्चय करके			

मूलम् ।

यथोदकन्दुर्गे वृष्टं पर्वतेषु विधावति एवं धर्मान् पृथक्पश्यँस्तानेवानुविधावति ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

यथा, उदकम्, दुर्गे, वृष्टम्, पर्वतेषु, विधावति, एवम्, धर्मान्, पृथक्, पश्यन्, तान्, एव, अनुविधावति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	जैसे
उदकम्	जल
दुर्गे	कठिन
पर्वतेषु	पर्वत पर
वृष्टम्	बरसा हुआ
विधावति	निम्न देश में फैल कर नष्ट होजाता है
एवम्	इसी प्रकार
धर्मान्	धर्मों को
पृथक्	भिन्न भिन्न
प्रतिशरीरम्	प्रतिशरीरमें
+ पुरुषः	जीवात्मा
पश्यन्	देखता हुआ
तान् एव	तिनहीं शरीरों को
अनुविधावति	वारंवार प्राप्त होता है

मूलम् ।

यथोदकं शुद्धे शुद्धमासिक्तन्तादृगेव भवति एवं मुनेर्विजानत आत्मा भवति गौतम ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

यथा, उदकम्, शुद्धे, शुद्धम्, आसिक्तम्, तादृक्, एव, भवति, एवम्, मुनेः, विजानतः, आत्मा, भवति, गौमत ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
गौतम	हे नचिकेता
यथा	जैसे
उदकम्	जल
शुद्धे	शुद्धस्थान में
आसिक्तम्	गिरा हुआ यानी वर्षा हुआ
तादृक् एव	वैसा ही
शुद्धम्	शुद्ध
भवति	बना रहता है
एवम्	इसी प्रकार
विजानतः	ज्ञानी
मुनेः	मुनि का
आत्मा	आत्मा
+ सदा	सदा
शुद्धम्	शुद्ध
भवति	रहता है

द्वितीयाऽध्यायस्य चतुर्थी वल्ली समाप्ता ॥ ४ ॥

मूलम् ।

पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्च विमुच्यते एतद्वै तत् ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

पुरम्, एकादशद्वारम्, अजस्य, अवक्रचेतसः, अनुष्ठाय, न, शोचति, विमुक्तः, च, विमुच्यते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अजस्य	जन्मरहित
अवक्रचेतसः	अकुटिल विज्ञानरूप चेतन आत्मा का
+ इदम्	यह
एकादशद्वारम्	ग्यारह दरवाजे वाला
पुरम्	पुररूपी शरीर है
+ यः	जो
तम्	उस पुरके स्वामी को
अनुष्ठाय	ध्यान करके
न शोचति	शोक नहीं करता है
सः	वह
विमुक्तः	मुक्त हुआ
च	भी
विमुच्यते	मुक्त होता है
तत्	सोई
वै	निश्चय करके
एतत्	यह ब्रह्म है

मूलम् ।

हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्बृहत् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

हंसः, शुचिषत्, वसुः, अन्तरिक्षसत्, होता, वेदिषत्, अतिथिः, दुरोणसत्, नृषत्, वरसत्, ऋतसत्, व्योमसत्, अब्जाः, गोजाः, ऋतजाः, अद्रिजाः, ऋतम्, बृहत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ अयम् आत्मा	यह आत्मा
हंसः	हंस है
शुचिषत्	पवित्र आकाश में स्थित है

वसुः= { वायुरूप होकर सबको अपनेविषे बसाने वाला है	वरसत्=देवताओं में स्थित है
अन्तरिक्ष सत्=अन्तरिक्ष में चलने वाला है	ऋतसत्=यज्ञ में स्थित है
होता=अग्निरूप है	व्योमसत्=आकाश में स्थित है
वेदिषत्=पृथिवी में स्थित है	अब्जाः=जलसे उत्पन्न हुआ है
अतिथिः=जलरूप होकर	गोजाः=पृथिवी से उत्पन्न हुआ है
दुरोणसत्=कलश विषे स्थित है	ऋतुजाः=यज्ञ से उत्पन्न हुआ है
नृसत्=मनुष्यों में स्थित है	अद्रिजाः=पर्वत से उत्पन्न भया है
	ऋतम्=सत्य है
	बृहत्=सब से बड़ा है

मूलम् ।

ऊर्द्ध्वम्प्राणमुन्नयत्यपानं प्रत्यगस्यति मध्ये वामनमासीनं विश्वेदेवा उपासते ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

ऊर्द्ध्वम्, प्राणम्, उन्नयति, अपानम्, प्रत्यक्, अस्यति, मध्ये, वामनम्, आसीनम्, विश्वेदेवाः, उपासते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः=जो		तम्=उस	
प्राणम्=प्राणवायु को		वामनम्=अंगुष्ठमात्र शिव	
ऊर्द्ध्वम्=ऊपर की ओर		मध्ये=हृदयाकाश विषे	
उन्नयति=लेजाता है		आसीनम्=स्थित को	
च=और		विश्वे=सब	
अपानम्=अपानवायु को		देवाः=चक्षुरादि देवता	
प्रत्यक्=नीचे की ओर		उपासते=उपासना करते हैं	
अस्यति=फेंकता है			

मूलम् ।

अस्य विस्रंसमानस्य शरीरस्थस्य देहिनः देहाद्विमुच्यमानस्य किमत्र परिशिष्यते एतद्वै तत् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

अस्य, विस्रंसमानस्य, शरीरस्थस्य, देहिनः, देहात्, विमुच्यमानस्य, किम्, अत्र, परिशिष्यते, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विस्रंसमानस्य	बाहर निकलनेवाले	अत्र	इस त्यागेहुये शरीर विषे
+ च	और	परिशिष्यते	अवशेष रहता है अर्थात् कुछ भी शेष रहता नहीं
विमुच्यमानस्य	देह को त्यागनेवाले	+ तस्मात्	इसलिये
अस्य	इस	एतत्	यही
शरीरस्थस्य	शरीर विषे स्थित	वै	निश्चय करके
देहिनः	जीव आत्मा के	तत्	वह ब्रह्म है
देहात्	देह से पृथक् होनेपर		
किम्	क्या		

मूलम् ।

न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

न, प्राणेन, न, अपानेन, मर्त्यः, जीवति, कश्चन, इतरेण, तु, जीवन्ति, यस्मिन्, एतौ, उपाश्रितौ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
कश्चन	कोई भी	न अपानेन	न अपान करके
मर्त्यः	मनुष्य	जीवति	जीता है
न प्राणेन	न प्राणों करके	+ परन्तु	परन्तु
च	और	इतरेण तु	औरही करके

जीवन्ति=जीवते हैं	उपाश्रितौ=आश्रित हो रहे
यस्मिन्=जिस में	हैं
एतौ=वे दोनों प्राणापान	+ तत् एव ब्रह्म=सोई ब्रह्म है

मूलम् ।

हन्त त इदम्प्रवक्ष्यामि गुह्यम्ब्रह्म सनातनम् यथा च मरणं प्राप्य आत्मा भवति गौतम ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

हन्त, ते, इदम्, प्रवक्ष्यामि, गुह्यम्, ब्रह्म, सनातनम्, यथा, च, मरणम्, प्राप्य, आत्मा, भवति, गौतम ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हन्त=अब		यथा=जिस प्रकार	
ते=तुझ से		आत्मा=अज्ञानी पुरुष का आत्मा	
इदम्=इस		मरणम्=मरण को	
सनातनम्=पुरातन		प्राप्य=प्राप्त होके	
गुह्यम्=गोप्य		संसारम्=संसार को	
ब्रह्म=ब्रह्म को		भवति=पावता है	
प्रवक्ष्यामि=कहताहूं		तम्=तिसको	
च=और		शृणु=श्रवण कर	
गौतम=हे नचिकेता			

मूलम् ।

योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथा कर्म यथा श्रुतम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

योनिम्, अन्ये, प्रपद्यन्ते, शरीरत्वाय, देहिनः, स्थाणुम्, अन्ये, अनुसंयन्ति, यथा, कर्म, यथा, श्रुतम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अन्ये	ज्ञानवान् से अन्य
देहिनः	देहाभिमानी अज्ञानी
शरीरत्वाय	शरीर के अर्थ
योनिम्	अनेक योनिको
यथाकर्म	कर्म के अनुसार
च	और
यथाश्रुतम्	प्रवृत्तिशास्त्र श्रवणानुसार
प्रपद्यन्ते	प्राप्त होते हैं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अन्ये	सकाम कर्म करने वालों से भी अन्य अत्यन्त मूढ़ पुरुष
स्थाणुम्	जङ्गमभाव को यानी वृक्ष पाषाण आदि को
यथाकर्म	कर्मानुसार
च	और
यथाश्रुतम्	कपोल कल्पित शास्त्र श्रवणानुसार
अनुसंयन्ति	प्राप्त होते हैं

मूलम् ।

य एष सुप्तेषु जागर्ति कामं कामं पुरुषो निर्मिमाणः तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते तस्मिँल्लोकाः श्रिताः सर्वे तदु नात्येति कश्चन एतद्वै तत् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

यः, एषः, सुप्तेषु, जागर्ति, कामम्, कामम्, पुरुषः, निर्मिमाणः, तत्, एव, शुक्रम्, तत्, ब्रह्म, तत्, एव, अमृतम्, उच्यते, तस्मिन्, लोकाः, श्रिताः, सर्वे, तत्, उ, न, अत्येति, कश्चन, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो
एषः	यह
पुरुषः	पुरुष
सुप्तेषु	स्वप्न विषे
कामंकामम्	वांछित विषयों को
निर्मिमाणः	रचता हुआ
जागर्ति	जागता है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत् एव	सोई
तत्	वह
शुक्रम्	शुद्ध
ब्रह्म	ब्रह्म है
च	और
तत् एव	सोई
अमृतम्	अविनाशी

उच्यते=कहा जाता है
तस्मिन्=तिसही विषे
सर्वे=सब
लोकाः=लोक
श्रिताः=आश्रित हैं
+ च=और
तत्=उसको
कश्चन=कोई भी
न=नहीं
अत्येति=उल्लंघन करता है
+ अस्मात् कारणात् = इसी कारण से
एतत् वै=यही
तत्=वह ब्रह्म है

मूलम् ।

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

अग्निः, यथा, एकः, भुवनम्, प्रविष्टः, रूपम्, रूपम्, प्रतिरूपः, बभूव, एकः, तथा, सर्वभूतान्तरात्मा, रूपम्, रूपम्, प्रतिरूपः, बहिः, च ॥

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यथा=जैसे
एकः=एक
अग्निः=अग्नि
भुवनम्=भुवन विषे
प्रविष्टः=प्रवेश करता हुआ
रूपम् रूपम्=रूपरूप से याने अनेक रूप से
प्रतिरूपः=हर एक उपाधि के साथ तद्रूप
बभूव=होता भया
तथा=वैसेही
सर्वभूतान्तरात्मा = सब भूतों के अन्तर का आत्मा भी
एकः=एक होता हुआ
रूपम् रूपम्=देह देह के प्रति
प्रतिरूपः=तादात्म्याऽध्यास करके
बभूव=तद्रूपही होता भया
च=और
बहिः= आकाशवत् सबके बाहर भी स्थित होता भया

मूलम् ।

वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

वायुः, यथा, एकः, भुवनम्, प्रविष्टः, रूपम्, रूपम्, प्रतिरूपः, बभूव, एकः, तथा, सर्वभूतान्तरात्मा, रूपम्, रूपम्, प्रतिरूपः, बहिः, च ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यथा=जैसे
एकः=एक
वायुः=वायु
भुवनम्=चतुर्दश लोक में
प्रविष्टः=प्रवेश करता हुआ
रूपम् रूपम्=शरीर शरीर प्रति
प्रतिरूपः=तद्रूप
बभूव=होता भया
तथा=वैसेही
सर्वभूतान्तरात्मा=सब भूतों का अन्तरात्मा
एकः=एक होता हुआ
रूपम् रूपम्=देह देह प्रति
प्रतिरूपः=तादात्म्यरूप
बभूव=होता भया
च=और
बहिः=बाहर भी आकाशवत् व्याप्त होता भया

मूलम् ।

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

सूर्य्य, यथा, सर्वलोकस्य, चक्षुः, न, लिप्यते, चाक्षुषैः, बाह्यदोषैः एकः, तथा, सर्वभूतान्तरात्मा, न, लिप्यते, लोकदुःखेन, बाह्यः ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

यथा=जैसे
सूर्य्यः=सूर्य
सर्वलोकस्य=सब लोकों का
चक्षुः=नेत्रभूत होता हुआ
चाक्षुषैः=लोकों के चक्षुओं के
बाह्यदोषैः=बाह्यदोषों करके
न लिप्यते=नहीं लिपायमान होता है
तथा=वैसेही
एकः=एक
सर्वभूतान्तरात्मा=सब भूतों का अंतरात्मा
बाह्यः=पृथक् होता हुआ
लोकदुःखेन=लोकों के दुःखसे
न लिप्यते=नहीं लिपायमान होताहै

मूलम् ।

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधा यः करोति तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतंनेतरेषाम् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

एकः, वशी, सर्वभूतान्तरात्मा, एकम्, रूपम्, बहुधा, यः, करोति, तम्, आत्मस्थम्, ये, अनुपश्यन्ति, धीराः, तेषाम्, सुखम्, शाश्वतम्, न, इतरेषाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सर्वभूतान्तरात्मा	सब भूतों का अन्तर आत्मा
एकः	एक है
वशी	सबको वश करने वाला है
एकम् रूपम्	अपने एकही रूपको
बहुधा	उपाधी करके बहुत प्रकार का
यः	जो
करोति	करलेता है
तम्	तिस
आत्मस्थम्	शरीरमें स्थित आत्माको
ये	जो
धीराः	विवेकी पुरुष
अनुपश्यन्ति	अनुभव करते हैं
तेषाम्	तिनकोही
शाश्वतम्	नित्य
सुखम्	सुखहोता है
इतरेषाम्	इतर पुरुषों को
न	नहीं होता है

मूलम् ।

नित्योनित्यानाञ्चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान्. तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

नित्यः, अनित्यानाम्, चेतनः, चेतनानाम्, एकः, बहूनाम्, यः, विदधाति, कामान्, तम्, आत्मस्थम्, ये, अनुपश्यन्ति, धीराः, तेषाम्, शान्तिः, शाश्वती, न, इतरेषाम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	=जो व्यापक आत्मा
अनित्यानाम्	=अनित्य जगत् आदिकों का
नित्यः	=अधिष्ठान कारणरूप नित है
च	=और
चेतनानाम्	=चेतनका भी
चेतनः	=चेतन है
सः	=सोई
एकः	=एक हुआ हुआ
बहूनाम्	=अनंत जीवों प्रति
कामान्	=कर्मों अनुसार भोगोंको
विदधाति	=देता है
तम्	=तिस
आत्मस्थम्	=बुद्धिमें स्थित आत्माको
ये	=जो
धीराः	=विवेकी पुरुष
अनुपश्यन्ति	=अनुभव करते हैं
तेषाम्	=उनको
शाश्वती	=नित्य
शान्तिः	=शान्तिरूप मोक्ष प्राप्त है
इतरेषाम्	=औरों को
न	=नहीं

मूलम् ।

तदेतदिति मन्यन्तेऽनिर्देश्यम्परमं सुखम् कथन्नु तद्विजानीयां किमु भाति विभाति वा ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

तत्, एतत्, इति, मन्यन्ते, अनिर्देश्यम्, परमम्, सुखम्, कथम्, नु, तत्, विजानीयाम्, किमु, भाति, विभाति, वा ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	=जो
परमम्	=उत्कृष्ट
सुखम्	=सुख
अनिर्देश्यम्	=कहने में आवै नहीं
तत्	=सोई
एतत्	=यह आत्मा ज्ञानस्वरूप है
इति	=ऐसा
+ ब्रह्मविदः	=ब्रह्मवेत्ता
मन्यन्ते	=मानते हैं
भगवन्	=हे भगवन्
तत्	=उस परमात्मा को
कथम् नु	=कैसे

विजानीयाम्=जानूं मैं	वा=और
तत्=वह	किमु=कैसे
किमु=कैसे	विभाति=स्पष्टभासता है
भाति=प्रकाशता है	

नोट—नचिकेता यमराज भगवान् से कहता है कि हे भगवन् जो सुखरूप आत्मा ब्रह्मवेत्ताओं को प्राप्त है उसको मैं कैसे जानूं ॥

मूलम् ।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकन्नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः तमेव भान्तमनुभाति सर्वन्तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥१५॥

पदच्छेदः ।

न, तत्र, सूर्यः, भाति, न, चन्द्रतारकम्, न, इमाः, विद्युतः, भान्ति, कुतः, अयम्, अग्निः, तम्, एव, भान्तम्, अनुभाति, सर्वम्, तस्य, भासा, सर्वम्, इदम्, विभाति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्र=तिस को		अयम्=यह	
सूर्यः=सूर्य		अग्निः=लौकिक अग्नि	
न भाति=नहीं प्रकाश कर सक्ता है		+ प्रकाशयिष्यति=प्रकाश करैगी किन्तु नहीं करैगी	
च=और		तम् एव=तिसही	
चन्द्रतारकम्=चंद्रमा सहित तारों के		भान्तम्=प्रकाशमान के पीछे	
न भाति=नहीं प्रकाश कर सक्ता है		सर्वम्=सब जगत्	
च=और		अनुभाति=प्रकाशमान होता है	
इमाः=ये		च=और	
विद्युतः=विजुलियां भी		तस्य=तिसही के	
न भान्ति=नहीं प्रकाश कर सक्ती हैं		भासा=प्रकाश करके	
+ तर्हि=तब		इदंसर्वम्=यह सम्पूर्ण सूर्यादि	
कुतः=कैसे		विभाति=प्रकाशमान होता है	
तम्=उसको			

इति द्वितीयाध्याये पञ्चमवल्ली समाप्ता ॥ ५ ॥

मूलम् ।

ऊर्द्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते तस्मिंल्लोकाःश्रिताः सर्वे तदु नात्येति कश्चन एतद्वैतत् १॥

पदच्छेदः ।

ऊर्ध्वमूलः, अवाक्शाखः, एषः, अश्वत्थः, सनातनः, तत्, एव, शुक्रम्, तत्, ब्रह्म, तत्, एव, अमृतम्, उच्यते, तस्मिन्, लोकाः, श्रिताः, सर्वे, तत्, उ, न, अत्येति, कश्चन, एतत्, वै, तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः=यह संसार		उच्यते=कहा जाता है	
ऊर्द्ध्वमूलः=ऊर्द्ध्वमूल		तस्मिन्=उस विषे	
अवाक्शाखः=नीचे शाखा वाला		सर्वे=सब	
सनातनः=अनादि काल का		लोकाः=लोक	
अश्वत्थः=पीपल का वृक्ष है		श्रिताः=आश्रयको प्राप्त हैं	
तत् एव=तिस संसाररूपी वृक्ष का मूल		उ=और	
शुक्रम्=शुद्ध		तत्=उस को	
ब्रह्म=ब्रह्म है		कश्चन=कोई भी	
च=और		न अत्येति=नहीं उल्लंघन करसक्ता है	
तत् एव=वही		एतत्=यही	
अमृतम्=अविनाशी		वै=निश्चय करके	
		तत्=वह ब्रह्म है	

मूलम् ।

यदिदं किञ्च जगत्सर्वं प्राण एजति निःसृतम् महद्भयम् वज्रमुद्यतं य एतद्विदुरमृतास्ते भवंति ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

यत्, इदम्, किञ्च, जगत्, सर्वम्, प्राणे, एजति, निःसृतम्, महद्भयम्, वज्रम्, उद्यतम्, ये, एतत्, विदुः, अमृताः, ते भवन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो
किञ्च	कुछ
इदम्	यह
सर्वम्	सब
जगत्	जगत् है
तत्	सो
प्राणे	प्राणरूपी ब्रह्म विषे
एजति	चलता है यानी उसीके आश्रय है
च	और
ततः	तिसी से
निःसृतम्	निकसा भया है
महद्भयम्	वह ब्रह्म बड़ा भय वाला है
वज्रम्	वज्र को
उद्यतम्	उठाये हुये है
ये	जो विवेकी जन
एतत्	इसको
विदुः	जानते हैं
ते	वे
अमृताः	अमर
भवन्ति	होते हैं

मूलम् ।

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्य्यः भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

भयात्, अस्य, अग्निः, तपति, भयात्, तपति, सूर्यः, भयात्, इन्द्रः, च, वायुः, च, मृत्युः, धावति, पञ्चमः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अस्य	इस परमात्मा के
भयात्	भयसे
अग्निः	अग्नि
तपति	तपता है
च	और
सूर्य्यः	सूर्य भी
अस्य	इसी के
भयात्	भय से
तपति	तपता है
च	और
इन्द्रः	इन्द्र
अस्य	इसके
भयात्	भय से
धावति	दौड़ता है यानी वर्षा करता है
च	और

वायुः=वायु	च=और
अस्य=इसी के	पञ्चमः=पांचवां
भयात्=भय से	मृत्युः=मृत्यु
धावति=चलता है	धावति=दौड़ता है

मूलम् ।

इह चेदशकद्वोद्धुम्प्राक् शरीरस्य विस्रसः ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

इह, चेत्, अशकत्, बोद्धुम्, प्राक्, शरीरस्य, विस्रसः, ततः, सर्गेषु, लोकेषु, शरीरत्वाय, कल्पते ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इह=इसी जन्म में	+ नचेत्=और अगर नहीं
शरीरस्य=शरीर के	+ बोद्धुम्=जानने को
विस्रसः=पात होने से	असकत्=समर्थ भया
प्राक्=पहले	ततः=तो
चेत्=यदि	सर्गेषु=पृथिवी आदि
बोद्धुम्=जानने को	लोकेषु=लोकों विषे
अशकत्=समर्थ भया	शरीरत्वाय=शरीर धारणार्थ
तदा=तो	कल्पते=समर्थ होता है यानी अनेक योनियों को प्राप्त होता है
+ संसार बंधनात्=संसार के बंधन से	
+ विमुच्यते=छूटजाता है	

मूलम् ।

यथाऽदर्शे तथाऽऽत्मनि यथा स्वप्ने तथा पितृलोके यथाऽप्सु परीव ददृशे तथा गन्धर्वलोके छायातपयोरिव ब्रह्मलोके ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ।

यथा, आदर्शे, तथा, आत्मनि, यथा, स्वप्ने, तथा, पितृलोके, यथा, अप्सु, परि, इव, ददृशे, तथा, गंधर्वलोके, छ[illegible]योः, इव, ब्रह्मलोके ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा	जैसे
आदर्शे	दर्पण विषे अपना प्रतिबिंब
तथा	तैसे
आत्मनि	बुद्धि विषे चिदाभास
ददृशे	दिखाई पड़ता है
च	और
यथा	जैसे
स्वप्ने	स्वप्न विषे
तथा	वैसेही
पितृलोके	पितृलोकविषे
ददृशे	दिखलाई देता है
च	और
यथा	जैसे
परिइव	चारोंतरफसे भरेहुये
अप्सु	जल विषे प्रतिबिंब
ददृशे	दिखलाई देता है
तथा	तैसेही
गन्धर्वलोके	गन्धर्वलोक विषे
च	और
छायातपयोः	छाया धूपकी
इव	तरह
अयम् आत्मा	यह आत्मा
ब्रह्मलोके	ब्रह्मलोक विषे
ददृशे	दिखलाई देता है

मूलम् ।

इन्द्रियाणाम्पृथक्भावमुदयास्तमयौचयत् पृथगुत्पद्यमानानां मत्वा धीरो न शोचति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

इन्द्रियाणाम्, पृथक्, भावम्, उदयास्तमयौ, च, यत्, पृथक्, उत्पद्यमानानाम्, मत्वा, धीरः, न, शोचति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	और
पृथक्	भिन्न
उत्पद्यमानानाम्	उत्पन्न भये
इन्द्रियाणाम्	इन्द्रियों के
यत्	जो
पृथक्भावम्	भिन्न भाव हैं
तत्	उसको
उदयास्तमयौ	उत्पत्ति प्रलयरूप अथवा जाग्रत् सुषुप्ति रूप
मत्वा	जान करके
धीरः	धीर पुरुष
न शोचति	शोक को नहीं प्राप्त होता है

मूलम् ।

इन्द्रियेभ्यः परंमनो मनसः सत्त्वमुत्तमम् सत्त्वादधिमहानात्मा महतोऽव्यक्तमुत्तमम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ।

इन्द्रियेभ्यः, परम्, मनः, मनसः, सत्त्वम्, उत्तमम्, सत्त्वात्, अधि, महान्, आत्मा, महतः, अव्यक्तम्, उत्तमम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इन्द्रियेभ्यः=इन्द्रियों से		महानात्मा=महत्तत्त्व	
परम्=परे याने श्रेष्ठ		अधि=श्रेष्ठ है	
मनः=मन है		+ च=और	
मनसः=मन से		महतः=महत्तत्त्व से	
सत्त्वम्=बुद्धि		अव्यक्तम्=अव्यक्त	
उत्तमम्=श्रेष्ठ है		उत्तमम्=श्रेष्ठ है	
सत्त्वात्=बुद्धि से भी			

मूलम् ।

अव्यक्तात्तुपरः पुरुषोव्यापकोऽलिंगएव च यज्ज्ञात्वामुच्यते जन्तुरमृतत्वञ्च गच्छति ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

अव्यक्तात्, तु, परः, पुरुषः, व्यापकः, अलिंगः, एव, च, यत्, ज्ञात्वा, मुच्यते, जन्तुः, अमृतत्वम्, च, गच्छति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु=और		अमृतत्वम्=अमर भाव को	
यत्=जिसको		गच्छति=प्राप्त होता है	
ज्ञात्वा=जान करके		सः=वह	
जन्तुः=मनुष्य		पुरुषः=पुरुष	
मुच्यते=मुक्त होजाता है		अव्यक्तात्=अव्यक्त से	
च=और		परः=परे है	

व्यापकः=व्यापक है
च=और
एव=निश्चय करके
अलिंगः=चिह्नरहित है

मूलम् ।

न सन्दृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम् हृदा मनीषा मनसाभिक्लृप्तो य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

न, सन्दृशे, तिष्ठति, रूपम्, अस्य, न, चक्षुषा, पश्यति, कश्चन, एनम्, हृदा, मनीषा, मनसा, अभिक्लृप्तः, ये, एतत्, विदुः, अमृताः, ते, भवन्ति ॥

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

अस्य=इस प्रत्यगात्माका
रूपम्=रूप
सन्दृशे=दर्शनविषे
न तिष्ठति=नहीं स्थित होता है
च=और
कश्चन=कोई भी
एनम्=इसको
चक्षुषा=चक्षुकरके
न पश्यति=नहीं देखता है
हृदा=हृदय में स्थित
मनीषा=बुद्धि करके
+ च=और
मनसा=मन करके
अभिक्लृप्तः=प्रकाशित हुवा
एतत्=यह ब्रह्म है
एवम्=इस प्रकार इसको
ये=जो
विदुः=जानते हैं
ते=वे
अमृताः=अमर
भवन्ति=होते हैं

मूलम् ।

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमाङ्गतिम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

यदा, पञ्च, अवतिष्ठन्ते, ज्ञानानि, मनसा, सह, बुद्धिः, च, न, विचेष्टते, ताम्, आहुः, परमाम्, गतिम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा	जिस काल विषे	च	और
पञ्च	पांचों	बुद्धिः	बुद्धि भी
ज्ञानानि	ज्ञानेन्द्रियां	न विचेष्टते	नहीं चेष्टाकरती है
सह	सहित	ताम्	उस अवस्था को
मनसा	मनके	परमाम्	परम
अवतिष्ठन्ते	आत्मा में स्थिर होजाती हैं	गतिम्	गति
		आहुः	कहते हैं

मूलम् ।

तां योगमितिमन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम् अप्रमत्तस्तदा भवति योगो हि प्रभवाप्ययौ ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ।

ताम्, योगम्, इति, मन्यन्ते, स्थिराम्, इन्द्रियधारणाम्, अप्रमत्तः, तदा, भवति, योगः, हि, प्रभवाप्ययौ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मुमुक्षुः	मुमुक्षु	हि	क्योंकि
यदा	जब	योगः	योग
इन्द्रियधारणाम्	इन्द्रियों के स्वभाव	प्रभवाप्ययौ	उत्पत्ति और लय रूप है
स्थिराम्	स्थिर	+ च	और
कर्तुम्	करने को	ताम्	उस अवस्था को
अप्रमत्तः	प्रमाद रहित होता है	योगम्	योग
तदा	तब	इति	करके
योगः	योग	मन्यन्ते	मानते हैं
भवति	होता है		

मूलम् ।

नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्र कथं तदुपलभ्यते ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

न, एव, वाचा, न, मनसा, प्राप्तुम्, शक्यः, न, चक्षुषा, अस्ति, इति, ब्रुवतः, अन्यत्र, कथम्, तत्, उपलभ्यते ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

तत्=वह ब्रह्म
एव=निश्चय करके
न वाचा=न वाणी से
न मनसा=न मनसे
न चक्षुषा=न चक्षुसे
प्राप्तुम्=पानेको
शक्यम्=शक्य है
अन्यत्र=सिवाय

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

अस्ति=अस्तिपद
इति=करके
कथम्=और किस प्रकार
ब्रुवतः=श्रद्धावान् अस्तित्व-वादियों करके
तत्=वह
उपलभ्यते=प्राप्त किया जाता है

मूलम् ।

अस्तीत्येवोपलब्धव्यस्तत्त्वभावेन चोभयोः अस्तीत्येवोपलब्धस्य तत्त्वभावः प्रसीदति ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ।

अस्ति, इति, एव, उपलब्धव्यः, तत्त्वभावेन, च, उभयोः, अस्ति, इति, एव, उपलब्धस्य, तत्त्वभावः, प्रसीदति ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

अस्ति=है
इति एव=ऐसेही
तत्त्वभावेन=तत्त्वभाव करके
तत्=वह आत्मा
उपलब्धव्यः=प्राप्त होने योग्य है
च=और
उपलब्धस्य=प्राप्त होने योग्य

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

उभयोः=उन दोनों का याने सोपाधिक निरुपाधिक आत्माका
तत्त्वभावः=एकत्वभाव
अस्ति=है
इति=इस करकेही
प्रसीदति=प्रतीत होता है ॥

मूलम् ।

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य हृदिश्रिताः अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ।

यदा, सर्वे, प्रमुच्यन्ते, कामाः, ये, अस्य, हृदिश्रिताः, अथ, मर्त्यः, अमृतः, भवति, अत्र, ब्रह्म, समश्नुते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अस्य	इस विद्वान् पुरुष के	अथ	तब
हृदि	हृदयविषे	मर्त्यः	मनुष्य
ये	जो	अमृतः	अमर
कामाः	कामना	भवति	होता है
श्रिताः	स्थित हैं	+ च	और
ते	वे	अत्र	इसी जन्म में
सर्वे	सब	ब्रह्म	ब्रह्मको
यदा	जब	अश्नुते	प्राप्त होता है ॥
प्रमुच्यन्ते	छूट जाते हैं		

मूलम् ।

यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थयः अथ मर्त्योऽमृतो भवत्येतावदनुशासनम् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ।

यदा, सर्वे, प्रभिद्यन्ते, हृदयस्य, इह, ग्रन्थयः, अथ, मर्त्यः, अमृतः, भवति, एतावत्, अनुशासनम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यदा	जब	ग्रन्थयः	ग्रन्थियां
हृदयस्य	हृदय की	इह	इसी जन्म में
सर्वे	सम्पूर्ण	प्रभिद्यन्ते	टूटजाती हैं

अथ=तब	भवति=होता है
मर्त्यः=मनुष्य	एतावत्=इतनाही
अमृतः=मरण रहित	अनुशासनम्=उपदेश है ॥

मूलम् ।

शतञ्चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासाम्मूर्द्धानमभिनिःसृतैकात-योर्ध्वमायन्नमृतत्वमेति विष्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ।

शतम्, च, एका, च, हृदयस्य, नाड्यः, तासाम्, मूर्द्धानम्, अभिनिःसृता, एका, तया, ऊर्ध्वम्, आयन्, अमृतत्वम्, एति, विष्वक्, अन्याः उत्क्रमणे, भवन्ति ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च=और	+ जीवः=जीव पुरुष
शतं एका=एकसौ एक	अमृतत्वम्=अमर भाव को
हृदयस्य=हृदय की	एति=प्राप्त होता है
नाड्यः=नाडियां हैं	च=और
तासाम्=तिनमें से	अन्याः=इतर नाडियां
मूर्द्धानम्=मस्तक को	विष्वक्=सर्व ओर से
अभिनिःसृता=भेद करके निकसी भई	उत्क्रमणे=मरण विषे याने नाना योनियों की प्राप्ति विषे
एका=एक नाडी है	भवन्ति=निमित्त कारण होती हैं ॥
तया=उसी नाडी द्वारा	
ऊर्ध्वम्=ऊपर को	
आयन्=जाता हुआ	

मूलम् ।

अंगुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः तन्स्वाच्छरीरात्प्रवृहेन्मुञ्जादिवेषीकां धैर्येण तं विद्याच्छुक्रममृतं विद्याच्छुक्रममृतमिति ॥ १७ ॥

पदच्छेदः ।

अंगुष्ठमात्रः, पुरुषः, अन्तरात्मा, सदा, जनानाम्, हृदये, सन्निविष्टः, तम्, स्वात्, शरीरात्, प्रवृहेत्, मुञ्जात्, इव, इषीकाम्, धैर्येण, तम्, विद्यात्, शुक्रम्, अमृतम्, तम्, विद्यात्, शुक्रम्, अमृतम्, इति ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अंगुष्ठमात्रः=अंगुष्ठमात्र	इषीकाम्=सरकंडेको
पुरुषः=पुरुष	पृथक्=पृथक्
अन्तरात्मा=प्रत्यक् आत्मा	कुर्वन्ति=करते हैं
सदा=सर्वदा	धैर्येण=धैर्य करके
जनानाम्=मनुष्यों के	तम्=तिसको
हृदये=हृदयविषे	शुक्रम्=शुद्ध
सन्निविष्टः=स्थित है	अमृतम्=अमृतरूप
तम्=तिसको	इति=ऐसा
स्वात्=अपने	तम्=तिसको
शरीरात्=शरीरसे	शुक्रम्=शुद्ध
प्रवृहेत्=पृथक् करै	अमृतम् इति=अमृतरूप ऐसा
इव=जैसे	विद्यात्=जानै ॥
मुञ्जात्=मूंजसे	

मूलम् ।

मृत्युप्रोक्तान्नचिकेतोऽथ लब्ध्वा विद्यामेतां योगविधिञ्च कृत्स्नम्
ब्रह्मप्राप्तो विरजोऽभूद्विमृत्युरन्योप्येवं यो विदध्यात्ममेव ॥ १८ ॥

पदच्छेदः ।

मृत्युप्रोक्ताम्, नचिकेतः, अथ, लब्ध्वा, विद्याम्, एताम्, योगविधिम्, च, कृत्स्नम्, ब्रह्मप्राप्तः, विरजः, अभूत्, विमृत्युः, अन्यः, अपि, एवम्, यः, वित्, अध्यात्मम्, एव ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ=तदनन्तर	विद्याम्=विद्याको
मृत्युप्रोक्ताम्=मृत्यु करके कही हुई	च=और
एताम्=इस	कृत्स्नम्=संपूर्ण

योगविधिम्=योगविधि को
नचिकेतः=नचिकेत
लब्ध्वा=पाकरके
ब्रह्मप्राप्तः=ब्रह्मको प्राप्त होता हुआ
विरजः=धर्म अधर्मसेरहित
विमृत्युः=मृत्युरहित
अभूत्=होता भया
अन्याः अपि=और भी
एवम्=इस प्रकार
यः=जो
मुमुक्षुः=मुमुक्षुपुरुष
अध्यात्मम्=अध्यात्म विद्या को
वित्=जानने वाला है
सः=वह
अपि=भी
ब्रह्म=ब्रह्म को
आप्नोति=प्राप्त होता है ॥

मूलम् ।

ॐ स नाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ १९ ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति कठोपनिषद्समाप्तिमगात् शुभम् ॥

पदच्छेदः ।

सः, नौ, अवतु, सहनौ, भुनक्तु, सह, वीर्य्यम्, करवावहै, तेजस्वि, नौ, अधीतम्, अस्तु, मा, विद्विषावहै ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः=वह परमात्मा	
नौ=हम गुरु शिष्य दोनों को	
सह=साथही	
अवतु=रक्षा करै	
+ च=और	
नौ=हम दोनों को	
सह=साथही	
भुनक्तु=पालन करै	
+ च=और	
+ आवाम्सह=हम दोनों साथही	
वीर्य्यम्=सामर्थ्य को	
करवावहै=प्राप्त होवैं	
नौ=हम दोनों का	
अधीतम्=पढ़ा हुआ	
तेजस्वि=तेजवान्	
अस्तु=होवै	
आवाम्=हम दोनों परस्पर	
मा=न	
विद्विषावहै=द्वेषको प्राप्त होवैं ॥	

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति कठोपनिषद्भाषाटीका समाप्ता ॥